FREE DEMO SAMPLE

Guessing Paper 2026-27 Demo Set

B.A. · Semester 3 · Western Political Thought

SGGV Sarguja — संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, सरगुजा

यह सिर्फ़ एक डेमो सेट है 📘

इस डेमो से आप हमारे उत्तरों की क्वालिटी और पेपर का फ़ॉर्मेट देख सकते हैं। **असली 3 पूरे Guessing Paper सेट** (Set A, B, C) सिर्फ़ **Pariksha Pass App** में मिलते हैं:

- हर विषय के **3 पूरे सेट** — Most Probable, Highly Likely और Alternate
- हर प्रश्न का **सटीक मॉडल उत्तर** — हिंदी और English दोनों में
- **Year Tag** — जो प्रश्न पहले यूनिवर्सिटी परीक्षा में आ चुके हैं
- आपकी **यूनिवर्सिटी के पैटर्न** पर — पूरा सिलेबस कवर

▶ Pariksha Pass App डाउनलोड करें
यहाँ टैप करें — Google Play पर उपलब्ध

QR स्कैन करें

इस डेमो के प्रश्न असली Set A/B/C से नहीं लिए गए हैं। कोई भी पेपर परीक्षा में प्रश्न आने की गारंटी नहीं देता — इसे पाठ्यपुस्तक के साथ अभ्यास के लिए उपयोग करें। · Free sample shared on cguniversities.com

Paper Code: **PSSC-03**
DEMO SET

Roll No. | | | | | | | | | |

SANT GAHIRA GURU VISHWAVIDYALAYA, SARGUJA (C.G.)
संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, सरगुजा (छ.ग.)

B.A. (Third Semester) Examination, Nov.–Dec. 2026
बी.ए. (तृतीय सेमेस्टर) परीक्षा, नवम्बर–दिसम्बर 2026

WESTERN POLITICAL THOUGHT
पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन

Time / **समय** : 3 Hours	Maximum Marks / **पूर्णांक** : 70

DEMO SAMPLE – not from the actual sets. *Prepared by Online Student Seva to show the paper pattern and the model-answer style · not an official University question paper*

Instructions:

1. Section A: Q.1 (objective) is compulsory. All 5 short-answer questions in Q.2 are compulsory.
2. Section B: attempt **one** question from each unit (Q.3 to Q.6); each has an internal choice.
3. Figures in the right margin show full marks. Draw neat, labelled diagrams wherever necessary.

निर्देश : खण्ड-अ में प्रश्न 1 अनिवार्य है; प्रश्न 2 के सभी 5 प्रश्न अनिवार्य हैं। खण्ड-ब में प्रत्येक इकाई से **एक** प्रश्न हल करें (प्रश्न 3 से 6), सभी में आंतरिक विकल्प है। दाईं ओर के अंक पूर्णांक दर्शाते हैं। आवश्यकतानुसार स्वच्छ व नामांकित चित्र बनाएँ।

SECTION – A / खण्ड – अ

Q.1 Choose the correct answer. सही उत्तर चुनिए। 10 × 1 = 10

(1) Aristotle's 'Nicomachean Ethics' is chiefly a study of -
अरस्तू की 'निकोमैकियन एथिक्स' मुख्यतः किसका अध्ययन है -

(a) The best constitution for a Greek city-state / यूनानी नगर-राज्य का सर्वश्रेष्ठ संविधान
(b) The highest human good, happiness, reached through virtue / सर्वोच्च मानव-शुभ, अर्थात् सद्गुण द्वारा प्राप्त सुख
(c) The origin of the State in a social contract / सामाजिक समझौते से राज्य की उत्पत्ति
(d) The theory of eternal Forms / शाश्वत विचारों (फॉर्म्स) का सिद्धांत

(2) Most of Plato's works are written in the form of -
प्लेटो की अधिकांश रचनाएँ किस रूप में लिखी गई हैं -

(a) Letters to rulers / शासकों को लिखे पत्र
(b) Public speeches / सार्वजनिक भाषण
(c) Dialogues / संवाद
(d) Epic poems / महाकाव्य

(3) Which of the following is NOT one of the three classes of Plato's ideal State?
इनमें से कौन प्लेटो के आदर्श राज्य के तीन वर्गों में शामिल नहीं है?

(a) Rulers (philosopher-guardians) / शासक (दार्शनिक-संरक्षक)
(b) Auxiliaries (soldiers) / सहायक (सैनिक)
(c) Producers / उत्पादक
(d) Priests / पुरोहित

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

(4) Machiavelli's 'The Prince' was dedicated to -
मैकियावेली की 'द प्रिंस' किसे समर्पित की गई थी -

(a) Lorenzo de' Medici of Florence / फ्लोरेंस के लोरेंजो दे' मेडिची
(b) Pope Julius II / पोप जूलियस द्वितीय
(c) Cesare Borgia / सेज़ारे बोर्जिया
(d) Emperor Charles V / सम्राट चार्ल्स पंचम

(5) The Protestant Reformation is traditionally dated from the protest of Martin Luther in -
प्रोटेस्टेंट धर्म-सुधार का आरंभ परंपरागत रूप से मार्टिन लूथर के किस वर्ष के विरोध से माना जाता है -

(a) 1453 / 1453 (b) 1517 / 1517
(c) 1648 / 1648 (d) 1688 / 1688

(6) Hobbes wrote the 'Leviathan' (1651) against the background of -
हॉब्स ने 'लेवियाथन' (1651) किस पृष्ठभूमि में लिखी -

(a) The French Revolution / फ्रांसीसी क्रांति
(b) The Glorious Revolution / गौरवपूर्ण क्रांति
(c) The American War of Independence / अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम
(d) The English Civil War / इंग्लैंड का गृह युद्ध

(7) According to Locke, the natural rights of every individual are -
लॉक के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के प्राकृतिक अधिकार हैं -

(a) Power, wealth and honour / शक्ति, धन और सम्मान
(b) Equality, fraternity and justice / समानता, भ्रातृत्व और न्याय
(c) Life, liberty and property / जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति
(d) Duty, order and obedience / कर्तव्य, व्यवस्था और आज्ञापालन

(8) In his 'Discourse on Inequality', Rousseau traces the beginning of inequality to -
अपने 'असमानता पर निबंध' में रूसो असमानता का आरंभ किससे मानते हैं -

(a) Private property / निजी संपत्ति
(b) Differences of climate / जलवायु का अंतर
(c) Differences of physical strength alone / केवल शारीरिक बल का अंतर
(d) Religious belief / धार्मिक विश्वास

(9) Marx described religion as -
मार्क्स ने धर्म को क्या कहा है -

(a) The basis of economic relations / आर्थिक संबंधों का आधार
(b) The opium of the people / जनता की अफीम
(c) The source of surplus value / अतिरिक्त मूल्य का स्रोत
(d) The engine of history / इतिहास का इंजन

(10) Antonio Gramsci wrote his 'Prison Notebooks' while imprisoned by -
अंतोनियो ग्राम्शी ने अपनी 'प्रिज़न नोटबुक्स' किसके द्वारा कारावास में रहते हुए लिखीं -

(a) Hitler's Nazi regime / हिटलर की नाज़ी सरकार (b) Stalin's Soviet government / स्टालिन की सोवियत सरकार
(c) Franco's regime in Spain / फ्रांको की स्पेनी सरकार (d) Mussolini's Fascist regime / मुसोलिनी की फासीवादी सरकार

Q.2 **Answer the following questions.** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 5 × 4 = 20

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

(a) Explain Aristotle's views on property and the family. 4
संपत्ति और परिवार के संबंध में अरस्तू के विचारों की व्याख्या कीजिए।

(b) Explain Marsilius of Padua's view of the relation between the State and the Church. 4
राज्य और चर्च के संबंध पर पडुआ के मार्सिलियो के विचार स्पष्ट कीजिए।

(c) Explain Locke's labour theory of property. 4
लॉक के संपत्ति के श्रम-सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

(d) Explain Marx's theory of surplus value. 4
मार्क्स के अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

(e) Explain Hobbes's view of human nature. 4
मानव स्वभाव के संबंध में हॉब्स के विचार स्पष्ट कीजिए।

SECTION – B / खण्ड – ब

Long answer questions · one question from each unit with internal choice / **दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

Q.3 Explain Plato's Theory of Forms (Ideas) and show how it leads to his idea of the philosopher king. 10
प्लेटो के विचार सिद्धांत (थ्योरी ऑफ फॉर्म्स) की व्याख्या कीजिए और बताइए कि उससे दार्शनिक राजा का विचार कैसे निकलता है।

OR / अथवा

Why was Socrates tried and sentenced to death? Discuss the charges against him, his defence and the significance of his death for political philosophy.
सुकरात पर मुकदमा क्यों चला और उन्हें मृत्युदंड क्यों दिया गया? उन पर लगे आरोपों, उनकी प्रतिरक्षा और राजनीतिक दर्शन के लिए उनकी मृत्यु के महत्त्व की विवेचना कीजिए।

Q.4 Explain Machiavelli's concepts of virtu and fortuna. How far can a prince control fortune? 10
मैकियावेली की वर्चू (virtu) और फॉर्च्यून (fortuna) की अवधारणाओं की व्याख्या कीजिए। एक शासक भाग्य को कितना नियंत्रित कर सकता है?

OR / अथवा

Compare the political ideas of St. Augustine and St. Thomas Aquinas on the State, law and the relation between Church and State.
राज्य, कानून तथा चर्च और राज्य के संबंध पर सेंट ऑगस्टाइन और सेंट थॉमस एक्विनास के राजनीतिक विचारों की तुलना कीजिए।

Q.5 Discuss J. S. Mill's arguments for the equality of women in The Subjection of Women. 10
जे. एस. मिल की 'द सब्जेक्शन ऑफ विमेन' में स्त्रियों की समानता के पक्ष में दिए गए तर्कों की विवेचना कीजिए।

OR / अथवा

Explain Rousseau's theory of sovereignty and the General Will. What does he say about representation?
रूसो के संप्रभुता और सामान्य इच्छा के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए। प्रतिनिधित्व के बारे में वे क्या कहते हैं?

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

Q.6 Explain Marx's theory of alienation. How does capitalism alienate the worker? 10
मार्क्स के अलगाव (एलिएनेशन) के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए। पूँजीवाद श्रमिक को कैसे अलग-थलग करता है?

OR / अथवा

Compare Marx and Gramsci on the State, ideology and the means of social change. What is Gramsci's concept of hegemony?
राज्य, विचारधारा और सामाजिक परिवर्तन के साधनों पर मार्क्स और ग्राम्शी की तुलना कीजिए। ग्राम्शी की आधिपत्य (हेजेमनी) की अवधारणा क्या है?

— END OF QUESTION PAPER · प्रश्न-पत्र समाप्त —

ONLINE STUDENT SEVA · PARIKSHA PASS

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

Syllabus Coverage & Reference Books पाठ्यक्रम कवरेज एवं संदर्भ ग्रंथ

This paper follows the official **Western Political Thought** syllabus (PSSC-03) of the Chhattisgarh Higher Education Department (NEP-2020). The table shows what each unit contains and where this paper tests it.

Unit	Syllabus content (as prescribed)	Questions in this set
1	**Greek Thought** Socrates - virtue is knowledge; Plato - Ideal State: justice, education, communism, philosopher king; Aristotle - State, family, property, slavery, citizenship, constitution, revolution. **यूनानी चिंतन** — सुकरात - सद्‌गुण ही ज्ञान है; प्लेटो - आदर्श राज्य: न्याय, शिक्षा, साम्यवाद, दार्शनिक राजा; अरस्तू - राज्य, परिवार, संपत्ति, दासता, नागरिकता, संविधान, क्रांति।	Q.1(1), Q.1(2), Q.1(3), Q.2(a), Q.3
2	**From Mediaeval to Modernity** Features of mediaeval political thought, Two Swords theory, religious reform movement, conciliar movement; St. Augustine and Thomas Aquinas; Renaissance; Machiavelli - religion and morality, duties and conduct of the king; Jean Bodin - theory of sovereignty. **मध्यकाल से आधुनिकता की ओर** — मध्यकालीन राजनीतिक चिंतन की विशेषताएँ, दो तलवारों का सिद्धांत, धर्म सुधार आंदोलन, परिषद आंदोलन; सेंट ऑगस्टाइन एवं थॉमस एक्वीनास; पुनर्जागरण; मैकियावेली - धर्म एवं नैतिकता, शासक के कर्तव्य एवं आचरण; जीन बोदाँ - संप्रभुता का सिद्धांत।	Q.1(4), Q.1(5), Q.2(b), Q.4
3	**Modern Thought** Thomas Hobbes - sovereignty, social contract, individualism; John Locke - father of liberalism, social contract; J.J. Rousseau - social contract and general will; Jeremy Bentham - utilitarianism; J.S. Mill - amendment in utilitarianism, liberty and representative government. **आधुनिक चिंतन** — थॉमस हॉब्स - संप्रभुता, सामाजिक समझौता, व्यक्तिवाद; जॉन लॉक - उदारवाद के जनक, सामाजिक समझौता; रूसो - सामाजिक समझौता एवं सामान्य इच्छा; जेरेमी बेंथम - उपयोगितावाद; जे.एस. मिल - उपयोगितावाद में संशोधन, स्वतंत्रता एवं प्रतिनिधि शासन।	Q.1(6), Q.1(7), Q.1(8), Q.2(c), Q.2(e), Q.5
4	**From Modern to Contemporary** Hegel - dialectical method, State; T.H. Green - idea of State; Karl Marx - political thought; Antonio Gramsci - hegemony, role of intellectuals; Hannah Arendt - totalitarianism; Mary Wollstonecraft - first wave feminist view. **आधुनिक से समकालीन चिंतन** — हीगल - द्वंद्वात्मक पद्धति, राज्य; टी.एच. ग्रीन - राज्य संबंधी विचार; कार्ल मार्क्स - राजनीतिक चिंतन; ग्राम्शी - आधिपत्य, बुद्धिजीवियों की भूमिका; हैना आरेंट - सर्वाधिकारवाद; मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट - प्रथम लहर का नारीवादी दृष्टिकोण।	Q.1(9), Q.1(10), Q.2(d), Q.6

Books recommended in the syllabus (derive your answers from these) / पाठ्यक्रम में अनुशंसित पुस्तकें

Text books:

- J.C. Johari - Western Political Thought (Paschatya Rajnitik Chintan); Sahitya Bhawan Publications, Agra
- Dr. Jeevan Mehta - Paschatya Rajnitik Chintan; Ramprasad & Sons, Raipur (C.G.)
- Haridutt Vidyalankar - Adhunik Rajnitik Chintan; Ranjan Prakashan Griha, New Delhi
- J.P. Sood - Adhunik Rajnitik Vicharon ka Itihas, Vols. 1-4; K. Nath & Company, Meerut

Reference books:

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

- W.A. Dunning - A History of Political Theories (Rajnitik Siddhant ka Itihas); Central Book Depot, Allahabad
- George H. Sabine - A History of Political Theory (Rajnitik Darshan ka Itihas)
- Sukhbir Singh - History of Political Thought; Rastogi Publications, Meerut
- Shefali Jha - Western Political Thought: From Plato to Marx; Pearson, Delhi, 2010
- M.P. Singh and Himanshu Roy (eds.) - Indian Political Thought: Themes and Thinkers; Pearson, Delhi, 2011
- J.W. Allen - A History of Political Thought in the Sixteenth Century; Methuen, London, 1967

Always use the latest edition. Model answers in this paper follow the standard university textbooks listed above, in simplified exam-ready form. / नवीनतम संस्करण का प्रयोग करें।

About this Demo Set / इस डेमो सेट के बारे में

This is a **DEMO SET**. It follows the exact pattern of the university paper (same number of questions, marks and internal choices) so that you can see how our model answers are written. Its questions are practice questions chosen for demonstration; they are **not taken from the actual Guessing Paper sets**. Do not depend on any single paper – prepare the complete syllabus from your text book.

यह एक **डेमो सेट** है। यह विश्वविद्यालय के प्रश्न-पत्र के ठीक उसी प्रारूप (प्रश्नों की संख्या, अंक और आंतरिक विकल्प) में बना है, ताकि आप हमारे आदर्श उत्तरों की शैली देख सकें। इसके प्रश्न प्रदर्शन के लिए चुने गए अभ्यास-प्रश्न हैं; ये **असली गेसिंग पेपर सेटों में से नहीं लिए गए हैं**। किसी एक पेपर पर निर्भर न रहें - पूरा पाठ्यक्रम अपनी पाठ्यपुस्तक से तैयार करें।

ONLINE STUDENT SEVA · PARIKSHA PASS

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

PART – I : English Medium – Model Answers

Every answer is written to the marks allotted — learn the structure, then write in your own words.

Section A · Q.1 : Answer key

No.	Ans.	Correct option	Explanation
1	(b)	The highest human good, happiness, reached through virtue	The Ethics examines eudaimonia (happiness or flourishing) as the final end of life, reached by acting according to virtue. Constitutions are the subject of his Politics.
2	(c)	Dialogues	Plato wrote philosophical dialogues, such as the Republic and the Laws, in which Socrates is usually the chief speaker.
3	(d)	Priests	Plato divides his State into rulers, auxiliaries and producers, matching reason, spirit and appetite. He gives no separate class to priests.
4	(a)	Lorenzo de' Medici of Florence	Machiavelli wrote The Prince in 1513 (it was printed only in 1532, after his death) and dedicated it to Lorenzo de' Medici, hoping to win a place in the restored Medici government.
5	(b)	1517	Luther's Ninety-five Theses against the sale of indulgences (1517, Wittenberg) began the Reformation, which broke the political unity of Christendom under the Pope.
6	(d)	The English Civil War	The Leviathan appeared in 1651, at the end of the English Civil War (1642-51). Hobbes's fear of disorder explains his demand for a strong sovereign.
7	(c)	Life, liberty and property	Locke holds that in the state of nature every person already has rights to life, liberty and property, and that government exists to protect them.
8	(a)	Private property	For Rousseau the first man who fenced off a piece of land and said 'this is mine' founded civil society; property and the habit of comparing oneself with others created inequality.
9	(b)	The opium of the people	In his 1844 introduction to the Critique of Hegel's Philosophy of Right, Marx called religion the 'opium of the people': it eases suffering without removing its cause.
10	(d)	Mussolini's Fascist regime	Gramsci was arrested in 1926 by Mussolini's Fascist government and wrote the Notebooks in prison between 1929 and 1935; he died in 1937.

Section A · Q.2 : Short answers

Q.2(a) 4 marks · ≈ 100–120 words

Explain Aristotle's views on property and the family.

Aristotle regards the family (oikos) as the first natural community, made of husband and wife, parents and children, and master and slave, and meant to supply the needs of daily life. Many families make a village and many villages make the polis.

On property he disagrees with Plato's communism. People take more care of what is their own, common ownership breeds quarrels, and private property allows the pleasure and virtue of generosity. His ideal is therefore private ownership with common use, as friends share what they have. He accepts only the natural acquisition of goods needed for a good life and condemns

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

unlimited money-making. The household trains future citizens, and its property gives them the leisure needed for politics.

Q.2(b) 4 marks · ≈ 100–120 words

Explain Marsilius of Padua's view of the relation between the State and the Church.

In his book Defensor Pacis (1324), Marsilius of Padua argued that the chief cause of disorder in Europe was the Pope's claim to political power. He held that the final source of law and government is the people, acting as the 'human legislator'. Law is a command backed by force, so only the State can make and enforce it; the Church has no coercive power.

Priests have only spiritual duties, such as teaching and administering the sacraments, and like other citizens they are subject to the ruler. Church property and church courts also fall under the State. The right to interpret doctrine belongs to a General Council that includes laymen, not to the Pope alone. His ideas anticipated secular government and popular sovereignty and influenced the conciliar movement.

Q.2(c) 4 marks · ≈ 100–120 words

Explain Locke's labour theory of property.

Locke begins from the idea that God gave the earth to all people in common. Yet every person owns his own body and therefore his own labour. When a person mixes his labour with something in nature, such as gathering acorns or tilling land, he makes it his property.

Two limits apply. A person may take only as much as he can use before it spoils, and he must leave 'enough and as good' for others. Money, which does not spoil, allowed larger holdings by common consent. For Locke the State is formed mainly to protect this property, together with life and liberty. The theory justified private ownership, but it also became a starting point for later debates on inequality.

Q.2(d) 4 marks · ≈ 100–120 words

Explain Marx's theory of surplus value.

Marx's theory of surplus value explains how profit arises in capitalism. A worker sells his labour power for a wage equal to the value needed to keep him alive and fit for work. But he works for more hours than are needed to produce that value. For example, in a ten-hour day, six hours of labour may produce value equal to his wage, and the remaining four hours produce extra value.

This extra value, kept by the capitalist as profit, rent and interest, is surplus value. Marx calls it unpaid labour and the basis of exploitation. Capitalists try to raise it by lengthening the working day or by raising productivity. Because competition forces them to accumulate capital, the system leads to concentration of capital and recurring crises.

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

Q.2(e) 4 marks · ≈ 100–120 words

Explain Hobbes's view of human nature.

For Hobbes, human beings are bodies in motion, driven by desire and aversion. All people are roughly equal in strength and in mind, so each hopes to reach his own goals and therefore becomes an enemy of the others. Hobbes finds three causes of quarrel in human nature: competition for gain, diffidence (fear and the wish for safety) and glory (the wish for reputation).

Because no common power keeps them in awe, the state of nature becomes a war of all against all. Yet reason and the fear of violent death push people towards peace. This realistic and pessimistic picture of human beings is the basis of his argument for an absolute sovereign.

Section B : Long answers

Q.3 · Unit 1 10 marks · ≈ 600–700 words

Explain Plato's Theory of Forms (Ideas) and show how it leads to his idea of the philosopher king.

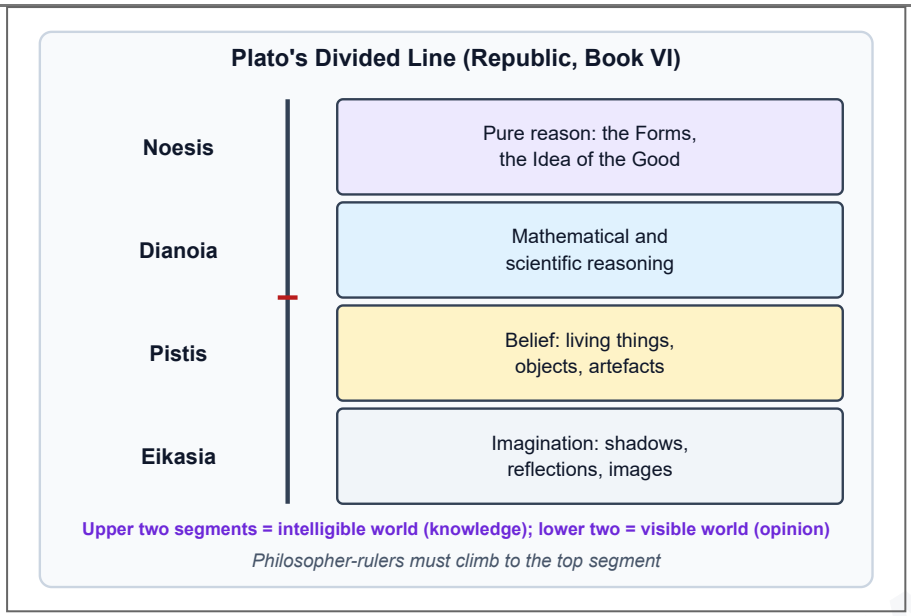
INTRODUCTION

Plato (427-347 BC), the pupil of Socrates and the teacher of Aristotle, believed that justice and good government cannot be understood without a theory of knowledge and reality. His Theory of Forms, developed mainly in the *Republic*, supplies that foundation, and the philosopher king is its political conclusion.

THE THEORY OF FORMS

- **Two worlds.** Plato separates the *visible world* of changing and imperfect things, known through the senses, from the *intelligible world* of eternal and unchanging Forms (Ideas), known only through reason.
- **Forms are the real.** A particular beautiful object or a just act is only a copy of the Form of Beauty or the Form of Justice. Objects decay; Forms do not.
- **Hierarchy of Forms.** At the top stands the **Form of the Good**, which gives truth and being to all other Forms, as the sun gives light and life to the visible world.
- **Knowledge and opinion.** Knowledge (*episteme*) concerns the Forms and is certain. Opinion (*doxa*) concerns changing particulars and may be mistaken.

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।



Plato's Divided Line: the visible and the intelligible world

THE ALLEGORY OF THE CAVE

Plato illustrates the theory through the story of the cave. Prisoners chained since childhood see only shadows on a wall and take them for reality. A prisoner who is freed and climbs out sees real objects and finally the sun, the symbol of the Good. If he returns to teach the others, they laugh at him and may even kill him. The climb is education; the return is the duty of the philosopher towards the community.

FROM FORMS TO THE PHILOSOPHER KING

1. **Politics needs knowledge.** If justice, courage and the good of the State are real Forms, then ruling is a science like navigation or medicine, and only those who know the Forms can practise it.
2. **Only philosophers know the Forms.** Ordinary people, merchants and soldiers live among opinions. Only the philosopher, after a long training, reaches knowledge of the Good.
3. **Hence the philosopher must rule.** Plato says that evils will not cease in cities until philosophers become kings, or kings become philosophers.
4. **Training.** The future ruler is selected by tests from childhood, studies gymnastics and music, then mathematics and dialectic up to the age of 35, serves the State in practical posts for 15 years, and at 50 is ready to see the Good and to rule.
5. **Rule without self-interest.** Because the guardians have no private property or family, they have no motive for corruption and rule for the good of all.

MERITS

- It treats politics as a matter of knowledge and moral purpose, not of mere power.
- It stresses education and fitness for office, an idea behind modern merit-based services.
- It links the State with justice, in which each class does its own work.

CRITICISM

- **Karl Popper** called the idea authoritarian, because it gives absolute power to an elite and leaves no room for criticism.
- Aristotle objected that Forms exist apart from things and do not explain change.
- Knowledge of the Good cannot be tested, so claims of expertise can be abused.

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

- Ordinary citizens are denied any share in government.

RELEVANCE TODAY

The idea survives in modern debates on expertise in government. Selection of civil servants by open examination, the demand for trained judges, and the call for ethical leadership all echo Plato's belief that public office should go to those who are tested, educated and committed to the public good rather than to the wealthy or merely popular.

CONCLUSION

The Theory of Forms is the metaphysical root of Plato's politics. It explains why he distrusts democracy and why he demands rulers of wisdom and character. Although the philosopher king is hard to realise, the ideal reminds every age that those who govern must combine knowledge with a commitment to the common good.

Q.3 (OR) · Unit 1 10 marks · ≈ 600–700 words

Why was Socrates tried and sentenced to death? Discuss the charges against him, his defence and the significance of his death for political philosophy.

INTRODUCTION

Socrates (469-399 BC) was the first great moral philosopher of Athens. He wrote nothing; we know him mainly from the dialogues of Plato and the writings of Xenophon. In 399 BC an Athenian jury condemned him to death, and the trial has remained a lasting symbol of the conflict between individual conscience and the State.

BACKGROUND OF THE TRIAL

- Athens had lost the Peloponnesian War (404 BC) and had suffered the brief rule of the Thirty Tyrants. Critias, one of the Thirty, had once been a companion of Socrates, which made the philosopher suspect.
- Socrates criticised some democratic practices, such as choosing officials by lot, and he questioned politicians, poets and craftsmen in public. This embarrassed powerful citizens; he called himself the *gadfly* of the State.
- In a time of insecurity, many Athenians saw his questioning of traditional values as dangerous.

THE CHARGES

The indictment was brought by Meletus, supported by Anytus and Lycon. It said that Socrates:

1. did not believe in the gods of the city and introduced new divinities (impiety); and
2. corrupted the young.

The case was heard by a large jury of ordinary citizens. A narrow majority found him guilty.

HIS DEFENCE (PLATO'S APOLOGY)

- He showed that the accusation of Meletus was inconsistent and unsupported.
- He explained that the Delphic oracle had called him the wisest of men. He understood this to mean that he alone knew his own ignorance, and he felt a divine duty to examine himself and others.

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

- He refused to give up philosophy even if the jury offered acquittal on that condition, and said that the unexamined life is not worth living.
- Asked to propose his own penalty, he first suggested free meals at public expense for his services to the city, then a small fine. The jury then voted for death.

DEATH AND THE QUESTION OF OBEDIENCE

In the *Crito*, friends arranged an escape, but Socrates refused. He argued that he had lived all his life under the laws of Athens, which had nurtured him, and had accepted them by choosing to stay. To break the laws would harm the State and show that he had never meant what he taught. He drank the hemlock, and in the *Phaedo* Plato describes his calm death.

SIGNIFICANCE FOR POLITICAL PHILOSOPHY

Issue	Meaning of the trial
Freedom of thought	An early test of free enquiry against majority opinion
Critique of democracy	Plato drew from it his doubt about rule by the ignorant majority
Obedience to law	His acceptance of the sentence is a classic argument for political obligation
Conscience and State	He obeyed the laws yet refused to give up his mission, a model of principled dissent
Role of philosophy	Philosophy is a public duty, not a private leisure

EVALUATION

Some scholars think the verdict reflects the fears of a defeated city; others say a democratic jury was entitled to judge him. In either case Athens has often been criticised for punishing speech, and the trial is still cited in debates on free expression and on civil disobedience.

LESSONS FOR MODERN DEMOCRACY

The trial is often recalled when courts or governments restrict speech. Democratic constitutions now protect free expression and peaceful dissent, partly because societies have learned from cases like this one that majorities can be wrong. At the same time, Socrates's choice to accept the law reminds citizens that dissent should be conducted by honest and open means, with respect for lawful procedure.

CONCLUSION

The death of Socrates shaped Plato's political thought and, through him, the whole of Western philosophy. It stands as a warning against the intolerance of majorities and as a lesson on the duty of citizens to examine their own society.

Q.4 · Unit 2 10 marks · ≈ 600–700 words

Explain Machiavelli's concepts of virtu and fortuna. How far can a prince control fortune?

INTRODUCTION

Niccolo Machiavelli (1469-1527), a Florentine diplomat and writer, wrote *The Prince* (composed 1513, published 1532) for rulers in an age of war and political change in Italy. Two ideas run

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

through the book: *virtu*, the ruler's own ability, and *fortuna*, the force of chance. Their relation explains how a prince can win and keep power.

MEANING OF VIRTU

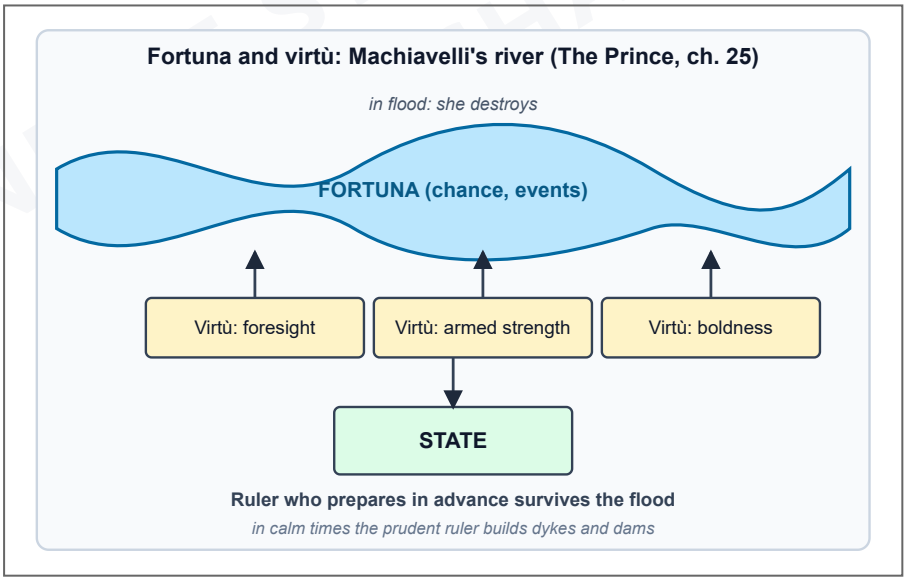
- Virtu does not mean moral goodness. It means **energy, skill, courage and political ability** to meet circumstances.
- It includes military strength, shrewd judgement, readiness to act at the right moment, and willingness to use cruelty or deceit when the safety of the State requires.
- Machiavelli admires Cesare Borgia and Hiero of Syracuse for virtu. He holds that a prince should be like the **lion and the fox**: strong enough to frighten wolves, cunning enough to detect traps.
- Virtu is also the habit of preparing in advance, so that changes do not destroy the State.

MEANING OF FORTUNA

- Fortuna is the Roman goddess of luck, standing for **chance, accident and the changing times**: wars, plagues, the death of a ruler, or a rival's rise.
- Machiavelli sometimes pictures her as a woman who favours the bold and young, who "are less cautious, more fierce, and command her with more audacity."
- She is powerful, but she does not rule everything.

THE RIVER METAPHOR (CHAPTER 25)

Machiavelli compares fortune to a **violent river** which in flood destroys trees and buildings and carries earth from one place to another. People cannot resist it, yet in calm weather they can build dykes and channels, so that when the river rises again it flows within controlled banks or its force is less harmful.



Fortuna as a river and virtu as the dykes built in calm times

HOW FAR CAN THE PRINCE CONTROL FORTUNE?

1. **Half and half.** He says that fortune may be the arbiter of half our actions, but she leaves the other half, or nearly so, to us.
2. **Preparation.** The wise prince builds dykes in good times: a citizen army instead of mercenaries, sound laws, good relations with the people.

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

3. **Adaptation.** Fortune changes, and success comes to the one whose way of acting suits the times. Pope Julius II succeeded by impetuous action because circumstances matched his nature; the same boldness might have ruined him later.
4. **Boldness.** Because fortune is like a woman, it is better to be impetuous than cautious; she yields to those who strike her.
5. **Limits.** Even the most skilled prince cannot always change his own nature, so some failure is unavoidable. Cesare Borgia built his power carefully, yet was ruined by the accident that he himself was dangerously ill when his father Pope Alexander VI died.

EVALUATION

- Machiavelli breaks with medieval ideas by making politics a field of human effort, not of divine providence alone.
- His view is neither fatalistic nor wholly confident; it is realistic.
- Critics argue that his virtu is amoral and that "dykes" cannot protect against every crisis. Supporters say he teaches readiness, which every statesman needs.

WHY THE BOOK STILL MATTERS

Machiavelli's lesson is that good intentions are not enough in politics: leaders need foresight, institutions and timely action. Modern writers on crisis management, from floods and pandemics to economic shocks, repeat his advice to build defences before disaster arrives. This is why *The Prince* is read as a guide to political realism and not only as a book about princes.

CONCLUSION

For Machiavelli the success of a prince is the result of the meeting of virtu and fortuna. Fortune supplies the opportunity, and virtu decides whether it is used. The prince who prepares in calm weather, adapts to the times and acts with courage can control about half of what happens, and that is enough to found and preserve a State.

Q.4 (OR) · Unit 2 10 marks · ≈ 600–700 words

Compare the political ideas of St. Augustine and St. Thomas Aquinas on the State, law and the relation between Church and State.

INTRODUCTION

St. Augustine (354-430) and St. Thomas Aquinas (1225-1274) are the two major thinkers of Christian political thought. Augustine lived at the end of the Roman Empire, Aquinas in the high Middle Ages, when Aristotle's works had been recovered in Europe. Their views on the State differ because their times and sources differ.

AUGUSTINE: THE STATE AND THE TWO CITIES

- **Context.** After the sack of Rome by the Goths in 410, pagans blamed Christianity. Augustine answered in the *City of God*.
- **Two cities.** The *City of God* is formed by those who love God; the *Earthly City* by those who love themselves. They are mixed in history and will be separated only at the Last Judgement.
- **Origin of the State.** The State is a result of the Fall of man. Sin made coercion, slavery and property necessary; it is a remedy for sin, not a natural institution.

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

- **Justice.** "Without justice, what are kingdoms but great bands of robbers?" A State without justice is not a true commonwealth.
- **Law.** Eternal law is the mind of God; earthly law is valid only so far as it fits it.
- **Church.** The Church guides the soul towards the heavenly city, and Christians must obey the State in secular matters because it keeps peace.

AQUINAS: THE STATE AS NATURAL

- **Context.** Aquinas, a Dominican friar, used Aristotle in his *Summa Theologica* and *On Kingship*.
- **Origin of the State.** Man is a social and political animal by nature, so the State would exist even without sin. It is natural and good, though grace perfects it.
- **Purpose.** To secure the common good, meaning peace, virtue and the conditions for a good life.
- **Fourfold law.**

1. *Eternal law*: God's plan for the universe.

2. *Natural law*: the part of eternal law known to human reason.

3. *Human law*: rules made by rulers for the common good, derived from natural law.

4. *Divine law*: revelation in Scripture. **Unjust law.** A human law that contradicts natural law is no law but a corruption of law. It need not be obeyed except to avoid scandal or disorder. **Government.** He prefers monarchy as the best form but a mixed constitution for practical safety, and allows resistance to a tyrant by public authority. **Church and State.** Both are supreme in their own spheres; the State handles temporal welfare, the Church eternal salvation, and in spiritual matters the secular ruler should defer to the Pope.

COMPARISON

Point	Augustine	Aquinas
Source of ideas	Plato, Scripture, Neoplatonism	Aristotle, Scripture
Origin of the State	Result of sin; remedial	Natural to man; good in itself
View of politics	Pessimistic	Optimistic
Law	Eternal law judges earthly law	Fourfold scheme, with natural law linking reason and God
Justice	Found fully only in the City of God	Possible in the earthly State through law
Church and State	Church guides; State keeps peace	Separate spheres; Church higher in spiritual matters
Right to resist	Obey even bad rulers	Unjust law not binding; tyranny may be resisted

EVALUATION

Augustine's pessimism shaped later Christian theology, including Luther. Aquinas reconciled faith and reason and gave medieval politics a rational and natural basis; his natural law influenced later thinkers such as Grotius and Locke. Critics say Augustine undervalues earthly life and Aquinas gives the Church too high a place.

IMPORTANCE IN LATER THOUGHT

The contrast also helps students see the change in political ideas. Augustine asks how a Christian should live in a fallen world, Aquinas explains how reason and law can serve the common good,

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

and the later modern thinkers move the source of authority from God to the people. Reading these thinkers in order shows how the concept of natural law was prepared for the modern idea of natural rights.

CONCLUSION

Augustine sees the State as a remedy for sin and Aquinas as a natural community aimed at the common good. Together they show the movement of Western thought from distrust of the earthly order towards a reasoned theory of law and political authority.

Q.5 · Unit 3 10 marks · ≈ 600–700 words

Discuss J. S. Mill's arguments for the equality of women in The Subjection of Women.

INTRODUCTION

John Stuart Mill (1806-1873) was a leading Utilitarian and liberal thinker. In *The Subjection of Women* (1869), written with the help of his wife Harriet Taylor and her daughter Helen, he argued that the legal subordination of one sex to the other is wrong in itself and a main hindrance to human progress. As a Member of Parliament in 1867 he had already moved an amendment to the Reform Bill to give votes to women on the same terms as men; it was defeated.

THE CENTRAL CLAIM

Mill states that "the legal subordination of one sex to the other is wrong in itself, and now one of the chief hindrances to human improvement; and that it ought to be replaced by a principle of perfect equality."

MAIN ARGUMENTS

1. **Custom is not nature.** Women are said to be "naturally" fit only for the home. Mill replies that what we call female nature is the result of education and social pressure. Nobody can know what women could do without long enforced subjection, just as no one could judge the nature of a plant grown only in a hothouse.
2. **Not a natural order, but the rule of force.** Women's subjection rests on the physical strength of men that has hardened into law. Marriage law of his time gave the husband control over the wife's person, property and earnings.
3. **Liberty.** Under his principle in *On Liberty*, each person should be free to develop and choose a way of life unless harm is done to others. Closing professions to women denies this freedom.
4. **Utility.** The best use of talent increases general happiness. Excluding half the population wastes ability and halves the pool of intellect available to society.
5. **Moral improvement of men.** Domestic inequality teaches men selfishness and a habit of command; a marriage of equals makes both partners better and trains children for justice.
6. **Women's own interest.** Votes and legal rights are necessary for women to protect their interests, because no group can rely on others to represent it.
7. **Evidence of ability.** Women who had been given an opportunity, such as queens, had often ruled well.

REFORMS DEMANDED

- Equal rights in marriage and property: the wife must not be a servant of the husband.

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

- Equal access to education and to all occupations and offices.
- The franchise for women on the same conditions as men.

EVALUATION

- **Merits.** It was a pioneering liberal attack on patriarchy and influenced later suffrage movements; it shows that liberalism, if consistent, must include women.
- **Limitations.** Mill thought that most married women would still choose household duties, and some feminists say he did not question the division of labour at home enough. His view of women's nature is also based on limited evidence.
- Even so, many of his demands, such as married women's property rights and the vote, were later achieved in Britain (the Married Women's Property Acts in 1870 and 1882, and the vote from 1918 for some women and 1928 for all adult women).

MILL'S PLACE IN LIBERAL THOUGHT

Mill argued that a liberal society is tested by how it treats its least powerful members. His essay joins his other works, *On Liberty* (1859), *Utilitarianism* (1861) and *Considerations on Representative Government* (1861), in defending individual development, and it explains why later campaigners such as Millicent Fawcett used his arguments in the suffrage movement.

CONCLUSION

Mill's essay applies the liberal principles of liberty, utility and individuality to the family and politics. It argues that society cannot be free or progressive while half of its members are denied equal rights, and it remains a classic of liberal feminism.

Q.5 (OR) · Unit 3 10 marks · ≈ 600–700 words

Explain Rousseau's theory of sovereignty and the General Will. What does he say about representation?

INTRODUCTION

Jean-Jacques Rousseau (1712-1778), the Genevan thinker, wrote *The Social Contract* (1762), which opens with the words "Man is born free, and everywhere he is in chains." His aim was to find a form of association in which people obey laws and yet remain as free as before. The answer is the sovereignty of the General Will.

THE SOCIAL CONTRACT

- In the state of nature, men are free and equal but lack morality and security as population grows.
- Each person gives up all his rights to the whole community, not to any one man. Because all do so on equal terms, no one loses and none has an interest in making the burden heavy for others.
- Thus there arises a moral and collective body, the *republic* or the people as sovereign, with a common "I" and a common will.

THE GENERAL WILL

1. **Meaning.** It is the will of the community directed to the *common good*, not the sum of private wishes. Rousseau distinguishes it from the **will of all**, which is only the total of individual

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

interests.

2. **Source.** It is formed when citizens, thinking as members of the whole and not as private persons, vote on laws. Differences of interest cancel out, and the common good remains.
3. **Always right.** The General Will is always directed to the public good, though the people's judgement may sometimes be misled.
4. **Forced to be free.** If a person refuses to obey the General Will, he will be "forced to be free," because obedience to a law one has prescribed to oneself is true freedom, and the private will of the citizen is the lesser self.
5. **Lawgiver.** Since the people may not see their own good, a wise lawgiver, such as Lycurgus of Sparta, may draft laws, but the people must still approve them.

NATURE OF SOVEREIGNTY

Feature	Meaning
Popular	It belongs to the whole people, not to a king
Inalienable	It cannot be transferred, any more than will can
Indivisible	It cannot be shared among separate powers; to divide it destroys it
Absolute	Over all the members, within the limit of the common good
Infallible in aim	It aims at the common good

SOVEREIGN AND GOVERNMENT

Sovereignty lies in the people in assembly and makes laws. The *government* is only an agent which carries them out and may be changed by the people at any time. He therefore distinguishes sovereign from government.

ROUSSEAU ON REPRESENTATION

- He says that the people of England think themselves free, but they are free only during the election of Members of Parliament; as soon as they are elected, the people are slaves, they are nothing.
- Since sovereignty is the exercise of the General Will, and will cannot be represented, deputies are only commissioners, not representatives. Laws not ratified by the people in person are null.
- This view suits small States such as the Greek city-states or Geneva, where all citizens can assemble. For large States, he suggests confederations.
- Democracy in the full sense, he says, is suitable only for a people of gods; the best practical government is an elective aristocracy.

EVALUATION

- **Merits.** It grounds legitimate authority in popular consent and equality, and inspired the French Revolution and later democracy.
- **Criticism.** Liberals such as Constant and Berlin fear that "forced to be free" can excuse tyranny of the majority; who finds out the General Will is unclear; and his rejection of representation is impractical for modern large States.

ROUSSEAU AND HIS SUCCESSORS

Rousseau's ideas about the people as the source of law influenced the Declaration of the Rights of Man in 1789 and the Jacobins. Later democracies mostly adopted representative government

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

despite his warning, using elections, referendums and local assemblies to bring citizens closer to law-making. In this sense, his objection works as a standard by which representative systems can be tested.

CONCLUSION

Rousseau's theory makes the people the only source of lawful power and sets liberty in obedience to self-made laws. Although the General Will is difficult to apply, his idea of popular sovereignty remains central to modern democratic thought.

Q.6 · Unit 4 10 marks · ≈ 600–700 words

Explain Marx's theory of alienation. How does capitalism alienate the worker?

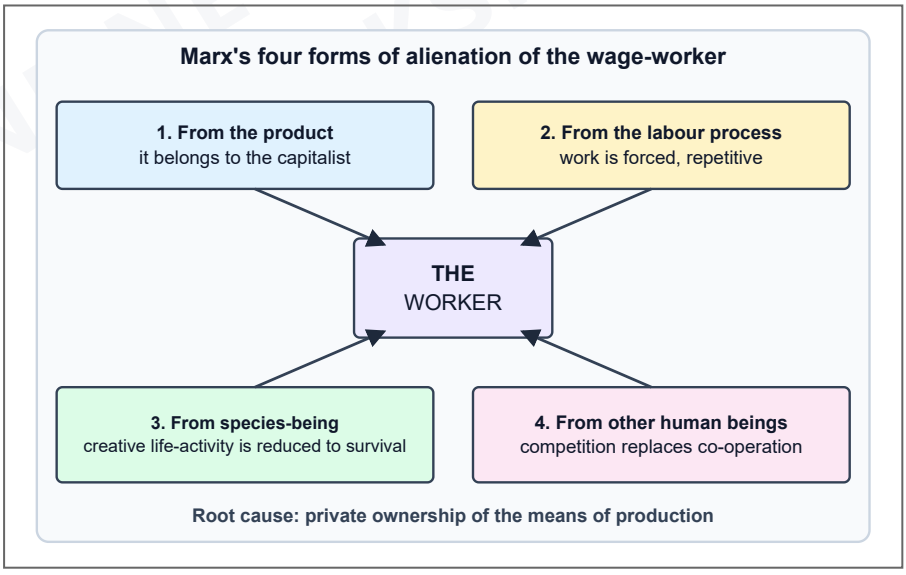
INTRODUCTION

Karl Marx (1818-1883) developed the theory of alienation (*Entfremdung*) in his *Economic and Philosophic Manuscripts of 1844*, written in Paris and published only in 1932. It is the key idea of the "early Marx" and describes how, under capitalism, the worker becomes a stranger to his work, to the product, to others and to his own human nature.

BASIS OF THE THEORY

Marx holds that the essence of human beings is **free, conscious, creative labour**. Through work, people shape nature and express themselves. In a society based on private property and wage labour, work ceases to be a fulfilment and becomes a forced means of survival. This loss is alienation.

FOUR FORMS OF ALIENATION



Marx's four forms of alienation of the worker under capitalism

1. **From the product of labour.** The worker produces goods but they belong to the capitalist. The more he produces, the poorer he becomes; the product stands against him as an alien power.
2. **From the process of labour (the act of production).** Work is external to the worker, not part of his nature. He feels free only outside work, at eating and drinking, and uncomfortable at it;

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

labour is forced, a sacrifice of the self, dictated by the factory discipline, the clock and the machine.

3. **From species-being (human nature).** Man is a creature of conscious, free activity. When work is merely a means to live, life activity itself becomes a means, and the worker is reduced to an animal-like condition.
4. **From other human beings.** Because the product and labour belong to another man, the worker is opposed to the capitalist and also competes against other workers for jobs. Human relations are turned into relations of money.

WHY CAPITALISM PRODUCES IT

Feature of capitalism	Result
Private ownership of means of production	The worker owns only his labour power
Division of labour and machinery	Work becomes narrow, repetitive and without skill
Wage labour	Labour is sold as a commodity
Competition	Workers compete; relations become cold and impersonal
Profit motive	The worker is valued for output, not as a person

COMMODITY FETISHISM

In *Capital* (Vol. I, 1867) Marx carries the idea further: relations among people appear as relations between things. Commodities seem to have their own value, hiding the labour that made them, and men are ruled by the market they themselves created.

OVERCOMING ALIENATION

Alienation cannot be removed by moral appeals or higher wages. It ends only with the abolition of private property and wage labour, through a proletarian revolution leading to communism, in which work becomes the free expression of human abilities and people develop in many directions: "hunt in the morning, fish in the afternoon, criticise after dinner" (*The German Ideology*).

EVALUATION

- **Merits.** It gives a moral and psychological dimension to Marx's economics and is applied in studies of modern work, such as assembly lines and the gig economy.
- **Criticism.** Louis Althusser called the concept pre-scientific and ideological and saw a break between the early and later Marx. Others say that the theory assumes a fixed human essence, and that alienation also exists in socialist societies with bureaucracy.

ALIENATION IN MODERN LIFE

The theory is still used to study factory and office work, call centres and platform labour, where workers often have little control over pace, product or purpose. Sociologists such as Robert Blauner studied alienation in industries, and discussions of job satisfaction, workers' participation in management and humane working hours follow the same concern that work should be meaningful.

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

CONCLUSION

Marx's theory shows capitalism as a system that damages human beings even while it produces wealth. Its main message is that real freedom requires meaningful and self-directed work, an idea that still shapes debates on labour and dignity.

Q.6 (OR) · Unit 4 10 marks · ≈ 600–700 words

Compare Marx and Gramsci on the State, ideology and the means of social change. What is Gramsci's concept of hegemony?

INTRODUCTION

Karl Marx (1818-1883) founded scientific socialism, while Antonio Gramsci (1891-1937), co-founder of the Italian Communist Party, revised Marxism in the light of the failure of revolution in Western Europe. Arrested by Mussolini's Fascist regime in 1926, Gramsci wrote the *Prison Notebooks* (1929-35), where he developed the idea of **hegemony**.

MARX'S VIEW

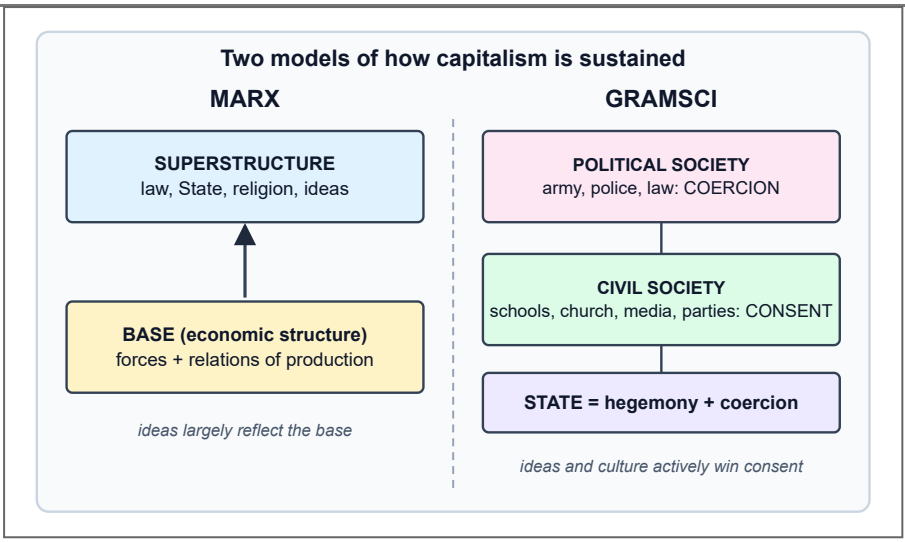
- **Base and superstructure.** The economic base (relations of production) determines the superstructure of law, politics, religion and ideas.
- **State.** In the *Communist Manifesto*, "the executive of the modern State is but a committee for managing the common affairs of the whole bourgeoisie." The State is an instrument of class rule.
- **Ideology.** The ruling ideas of every age are the ideas of the ruling class; ideology is false consciousness hiding exploitation.
- **Change.** Capitalism's contradictions will lead the proletariat to a revolution, seizure of State power and a transitional dictatorship of the proletariat before the State withers away.

GRAMSCI'S VIEW

- **Civil society and political society.** The State in the wider sense is "political society + civil society": **coercion** by the army, police and courts, plus **consent** built through schools, the Church, the press, trade unions and culture.
- **Hegemony.** It means the leadership of a class by **moral, cultural and intellectual consent**, not by force alone. Capitalist rule in the West persists because the masses accept bourgeois values as common sense. "Hegemony protected by the armour of coercion."
- **Organic intellectuals.** Each class produces its own intellectuals who give it awareness and unity; the working class must create its own and win over traditional ones.
- **Common sense and good sense.** Ordinary beliefs are a mixture of inherited prejudice and real experience; the task is to turn them into critical consciousness.
- **War of position and war of manoeuvre.** In Russia, where civil society was "primordial and gelatinous," a direct attack (war of manoeuvre) could capture the State. In the West, where civil society is strong, like "a powerful system of fortresses and earthworks," a long cultural struggle (war of position) is required to build a counter-hegemony before taking power.

ONLINE STUDENT SEVA · PARIKSHA PASS

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।



Marx's base and superstructure compared with Gramsci's civil and political society

COMPARISON

Point	Marx	Gramsci
Source of power	Economic base	Economic power plus cultural leadership
State	Instrument of class rule	Coercion plus consent; includes civil society
Ideology	Reflection of economic interests; false consciousness	Active, shapes common sense; a field of struggle
Role of intellectuals	Minor	Central; organic intellectuals
Change	Revolution from economic crisis	Counter-hegemony through culture, then political power
Determinism	Strong economic determinism	Rejects crude determinism; stresses human will ("pessimism of the intellect, optimism of the will")

EVALUATION

Gramsci enriched Marxism by explaining why capitalism survives without constant force, and he influenced Cultural Studies, Eurocommunism, and postcolonial and subaltern studies. Critics argue that his notebooks are fragmentary, his idea of hegemony is vague, and that he moves away from the economic basis of class struggle.

LATER INFLUENCE OF GRAMSCI

Gramsci's ideas are widely used in the study of media, education and popular culture, where consent is shaped without open force. Political movements that try to change public opinion before seeking power, and scholars who ask whose values appear as common sense in schools or news, are working with his concept of hegemony, even when they do not accept Marx's full programme.

CONCLUSION

Marx explained how economic structure shapes society; Gramsci showed how rule is sustained by consent as well as force. Hegemony thus makes the battle of ideas a part of the struggle for power, and it remains valuable for understanding politics, media and culture today.

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

भाग – II : हिन्दी माध्यम – आदर्श उत्तर

प्रत्येक उत्तर अंक-भार के अनुसार लिखा गया है — ढाँचा सीखें, फिर अपने शब्दों में लिखें।

खण्ड – अ · प्रश्न 1 : उत्तर कुंजी

क्र.	उत्तर	सही विकल्प	स्पष्टीकरण
1	(b)	सर्वोच्च मानव-शुभ, अर्थात् सद्गुण द्वारा प्राप्त सुख	'एथिक्स' में यूडेमोनिया (सुख या सम्यक् जीवन) को जीवन का अंतिम लक्ष्य माना गया है, जिसे सद्गुण के अनुसार आचरण से पाया जाता है। संविधानों का विषय उनकी 'पॉलिटिक्स' है।
2	(c)	संवाद	प्लेटो ने 'रिपब्लिक' और 'लॉज़' जैसे दार्शनिक संवाद लिखे, जिनमें प्रायः सुकरात मुख्य वक्ता होते हैं।
3	(d)	पुरोहित	प्लेटो अपने राज्य को शासक, सहायक और उत्पादक वर्गों में बाँटते हैं, जो बुद्धि, तेज (साहस) और वासना के अनुरूप हैं। पुरोहितों का अलग वर्ग वे नहीं मानते।
4	(a)	फ्लोरेंस के लोरेंजो दे' मेडिची	मैकियावेली ने 'द प्रिंस' 1513 में लिखी (यह उनकी मृत्यु के बाद 1532 में छपी) और इसे लोरेंजो दे' मेडिची को समर्पित किया, ताकि मेडिची सरकार में उन्हें स्थान मिल सके।
5	(b)	1517	भोग-विलास पत्रों (इंडल्जेंस) की बिक्री के विरुद्ध लूथर की 95 स्थापनाओं (1517, विटेनबर्ग) से धर्म-सुधार शुरू हुआ, जिसने पोप के अधीन ईसाई जगत की राजनीतिक एकता को तोड़ दिया।
6	(d)	इंग्लैंड का गृह युद्ध	'लेवियाथन' 1651 में, इंग्लैंड के गृह युद्ध (1642-51) के अंत में प्रकाशित हुई। अव्यवस्था के प्रति हॉब्स का भय ही शक्तिशाली संप्रभु की उनकी माँग का कारण है।
7	(c)	जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति	लॉक के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में ही हर व्यक्ति को जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति के अधिकार प्राप्त हैं, और सरकार इन्हीं की रक्षा के लिए है।
8	(a)	निजी संपत्ति	रूसो के अनुसार जिसने पहली बार ज़मीन घेरकर कहा 'यह मेरी है', उसी ने नागरिक समाज की नींव रखी; संपत्ति और दूसरों से अपनी तुलना की आदत ने असमानता पैदा की।
9	(b)	जनता की अफीम	'हीगल के अधिकार-दर्शन की आलोचना' की 1844 की भूमिका में मार्क्स ने धर्म को 'जनता की अफीम' कहा: वह दुख को कम करता है पर उसका कारण नहीं मिटाता।
10	(d)	मुसोलिनी की फासीवादी सरकार	ग्राम्शी को 1926 में मुसोलिनी की फासीवादी सरकार ने गिरफ़्तार किया; उन्होंने 1929 से 1935 के बीच जेल में नोटबुक्स लिखीं और 1937 में उनकी मृत्यु हुई।

खण्ड – अ · प्रश्न 2 : लघु उत्तर

प्रश्न 2(a) — 4 अंक · शब्द-सीमा ≈ 100–120 शब्द

संपत्ति और परिवार के संबंध में अरस्तू के विचारों की व्याख्या कीजिए।

अरस्तू परिवार (ओइकोस) को पहला स्वाभाविक समुदाय मानते हैं, जिसमें पति-पत्नी, माता-पिता और संतान तथा स्वामी और दास आते हैं और जिसका काम रोज़मर्रा की ज़रूरतें पूरी करना है। कई परिवारों से गाँव और कई गाँवों से नगर-राज्य (पोलिस) बनता है।

संपत्ति के प्रश्न पर वे प्लेटो के साम्यवाद से सहमत नहीं हैं। लोग अपनी चीज़ की देखभाल अधिक करते हैं, साझी संपत्ति से झगड़े बढ़ते हैं और निजी संपत्ति से उदारता का सुख और गुण संभव होता है। इसलिए उनका आदर्श

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

है निजी स्वामित्व और साझा उपयोग, जैसे मित्र आपस में अपनी चीज़ें बाँटते हैं। वे केवल उतने धन के स्वाभाविक अर्जन को मानते हैं जितना अच्छे जीवन के लिए चाहिए, और असीमित धन-संचय की निंदा करते हैं। परिवार भावी नागरिकों को तैयार करता है और उसकी संपत्ति उन्हें राजनीति के लिए अवकाश देती है।

प्रश्न 2(b) **4 अंक · शब्द-सीमा ≈ 100–120 शब्द**

राज्य और चर्च के संबंध पर पडुआ के मार्सिलियो के विचार स्पष्ट कीजिए।

अपनी पुस्तक 'डिफेंसर पैसिस' (1324) में पडुआ के मार्सिलियो ने कहा कि यूरोप की अशांति का मुख्य कारण पोप का राजनीतिक सत्ता का दावा है। उनके अनुसार कानून और शासन का अंतिम स्रोत जनता है, जो 'मानवीय विधायक' के रूप में कार्य करती है। कानून बल से समर्थित आदेश है, इसलिए उसे बनाने और लागू करने का अधिकार केवल राज्य को है; चर्च के पास बल-प्रयोग की शक्ति नहीं है।

पादरियों के कार्य केवल आध्यात्मिक हैं, जैसे उपदेश देना और धार्मिक संस्कार कराना, और अन्य नागरिकों की तरह वे शासक के अधीन हैं। चर्च की संपत्ति और अदालतें भी राज्य के अधीन आती हैं। धर्म-सिद्धांत की व्याख्या का अधिकार केवल पोप को नहीं, बल्कि सामान्य परिषद को है, जिसमें सामान्य जन भी शामिल हों। उनके विचार धर्मनिरपेक्ष शासन और जन-संप्रभुता के पूर्वाभास थे और उन्होंने परिषद आंदोलन को प्रभावित किया।

प्रश्न 2(c) **4 अंक · शब्द-सीमा ≈ 100–120 शब्द**

लॉक के संपत्ति के श्रम-सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

लॉक का आरंभ-बिंदु यह है कि ईश्वर ने पृथ्वी सब मनुष्यों को साझे में दी है। फिर भी हर व्यक्ति अपने शरीर का और इसलिए अपने श्रम का स्वामी है। जब कोई व्यक्ति प्रकृति की किसी चीज़ में अपना श्रम मिला देता है, जैसे बलूत के फल बटोरना या ज़मीन जोतना, तो वह चीज़ उसकी संपत्ति बन जाती है।

इस पर दो सीमाएँ हैं। व्यक्ति उतना ही ले सकता है जितना वह सड़ने से पहले उपयोग कर सके, और उसे दूसरों के लिए 'पर्याप्त और उतनी ही अच्छी' चीज़ें छोड़नी होंगी। धन (मुद्रा) खराब नहीं होता, इसलिए आपसी सहमति से उसके माध्यम से बड़ी संपत्ति रखना संभव हुआ। लॉक के अनुसार राज्य मुख्यतः इसी संपत्ति, जीवन और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए बनता है। यह सिद्धांत निजी स्वामित्व का औचित्य बताता है, पर बाद में असमानता पर बहस का आधार भी बना।

प्रश्न 2(d) **4 अंक · शब्द-सीमा ≈ 100–120 शब्द**

मार्क्स के अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

मार्क्स का अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत बताता है कि पूँजीवाद में लाभ कैसे पैदा होता है। मज़दूर अपनी श्रम-शक्ति बेचता है और उसे उतनी मज़दूरी मिलती है जितना मूल्य उसे जीवित रखने और काम के योग्य बनाए रखने के लिए चाहिए। परंतु वह उस मूल्य को पैदा करने के लिए ज़रूरी घंटों से अधिक घंटे काम करता है। उदाहरण के लिए, दस घंटे के कार्य-दिवस में छह घंटे का श्रम मज़दूरी के बराबर मूल्य बनाता है और शेष चार घंटे का श्रम अतिरिक्त मूल्य बनाता है।

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

यह अतिरिक्त मूल्य पूँजीपति के पास लाभ, लगान और ब्याज के रूप में रहता है। मार्क्स इसे अवैतनिक श्रम और शोषण का आधार कहते हैं। पूँजीपति कार्य-दिवस बढ़ाकर या उत्पादकता बढ़ाकर इसे बढ़ाना चाहते हैं। प्रतिस्पर्धा उन्हें पूँजी-संचय के लिए विवश करती है, इसलिए पूँजी का केंद्रीकरण और बार-बार संकट आते हैं।

प्रश्न 2(e) — 4 अंक · शब्द-सीमा ≈ 100–120 शब्द

मानव स्वभाव के संबंध में हॉब्स के विचार स्पष्ट कीजिए।

हॉब्स के अनुसार मनुष्य गतिशील पिंड हैं, जो इच्छा और विरक्ति से संचालित होते हैं। सभी लोग शक्ति और बुद्धि में लगभग बराबर हैं, इसलिए हर कोई अपने लक्ष्य पाने की आशा रखता है और इसी कारण दूसरों का शत्रु बन जाता है। हॉब्स मानव स्वभाव में झगड़े के तीन कारण बताते हैं: लाभ के लिए प्रतिस्पर्धा, अविश्वास (भय और सुरक्षा की इच्छा) तथा यश की लालसा।

चूँकि इन्हें भयभीत रखने वाली कोई सामान्य सत्ता नहीं होती, इसलिए प्राकृतिक अवस्था सबके विरुद्ध सबके युद्ध में बदल जाती है। फिर भी बुद्धि और हिंसक मृत्यु का भय लोगों को शांति की ओर धकेलते हैं। मनुष्य का यह यथार्थवादी और निराशावादी चित्र निरंकुश संप्रभु के उनके तर्क का आधार है।

खण्ड – ब · दीर्घ उत्तर

प्रश्न 3 · इकाई 1 — 10 अंक · ≈ 600–700 शब्द

प्लेटो के विचार सिद्धांत (थ्योरी ऑफ फॉर्म्स) की व्याख्या कीजिए और बताइए कि उससे दार्शनिक राजा का विचार कैसे निकलता है।

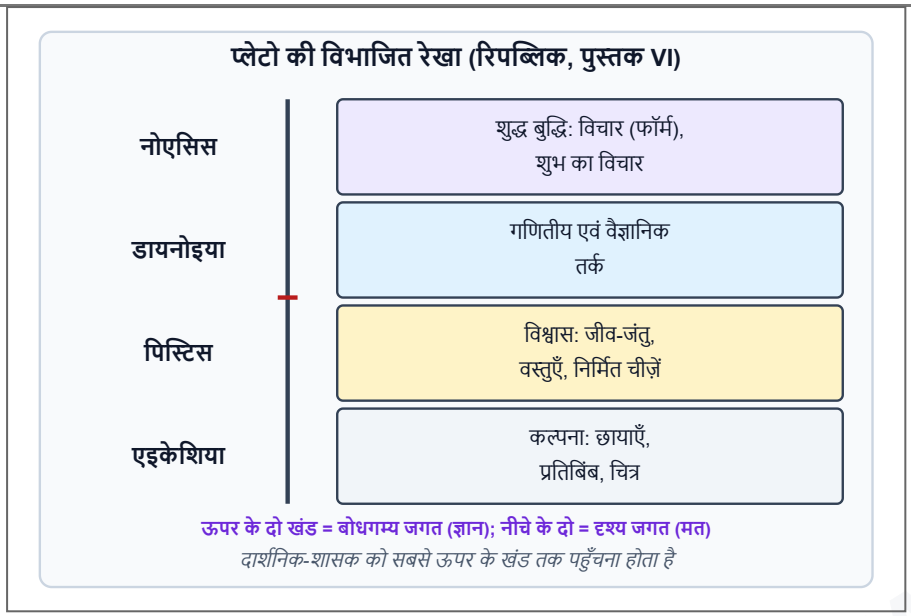
प्रस्तावना

सुकरात के शिष्य और अरस्तू के गुरु प्लेटो (427-347 ई.पू.) का मत था कि न्याय और सुशासन को ज्ञान और यथार्थ के सिद्धांत के बिना नहीं समझा जा सकता। उनका विचार सिद्धांत (थ्योरी ऑफ फॉर्म्स), जो मुख्यतः 'रिपब्लिक' में विकसित हुआ, इसी का आधार है और दार्शनिक राजा उसका राजनीतिक निष्कर्ष है।

विचार सिद्धांत

- **दो जगत।** प्लेटो इंद्रियों से जाने जाने वाले परिवर्तनशील और अपूर्ण *दृश्य जगत* को शाश्वत और अपरिवर्तनीय विचारों (फॉर्म्स) के *बोधगम्य जगत* से अलग मानते हैं, जिसे केवल बुद्धि से जाना जा सकता है।
- **विचार ही वास्तविक हैं।** कोई सुंदर वस्तु या न्यायपूर्ण कार्य सौंदर्य या न्याय के विचार की केवल प्रतिलिपि है। वस्तुएँ नष्ट होती हैं; विचार नष्ट नहीं होते।
- **विचारों का क्रम।** सबसे ऊपर **शुभ का विचार** है, जो अन्य सभी विचारों को सत्य और अस्तित्व देता है, जैसे सूर्य दृश्य जगत को प्रकाश और जीवन देता है।
- **ज्ञान और मत।** ज्ञान (एपिस्टेमे) विचारों का होता है और निश्चित है। मत (डोक्सा) बदलती हुई वस्तुओं का होता है और गलत भी हो सकता है।

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।



प्लेटो की विभाजित रेखा: दृश्य और बोधगम्य जगत

गुफा का रूपक

प्लेटो इस सिद्धांत को गुफा की कथा से समझाते हैं। बचपन से जंजीरों में बँधे कैदी दीवार पर केवल परछाइयाँ देखते हैं और उन्हीं को सच मान लेते हैं। जो कैदी मुक्त होकर बाहर निकलता है, वह असली वस्तुएँ और अंत में सूर्य देखता है, जो शुभ का प्रतीक है। यदि वह लौटकर दूसरों को सिखाना चाहे, तो वे उसका उपहास करते हैं और उसे मार भी सकते हैं। ऊपर चढ़ना शिक्षा है और लौटना समुदाय के प्रति दार्शनिक का कर्तव्य है।

विचारों से दार्शनिक राजा तक

1. **राजनीति के लिए ज्ञान चाहिए।** यदि न्याय, साहस और राज्य का हित वास्तविक विचार हैं, तो शासन नौवहन या चिकित्सा की तरह एक विज्ञान है, और उसे वही कर सकता है जो इन विचारों को जानता है।
2. **केवल दार्शनिक विचारों को जानते हैं।** सामान्य लोग, व्यापारी और सैनिक मतों के बीच जीते हैं। केवल दार्शनिक, लंबे प्रशिक्षण के बाद, शुभ के ज्ञान तक पहुँचता है।
3. **इसलिए दार्शनिक को ही शासन करना चाहिए।** प्लेटो कहते हैं कि नगरों के कष्ट तब तक नहीं मिटेंगे जब तक दार्शनिक राजा नहीं बनते, या राजा दार्शनिक नहीं बन जाते।
4. **प्रशिक्षण।** भावी शासक का चयन बचपन से परीक्षाओं द्वारा होता है; वह व्यायाम और संगीत पढ़ता है, फिर 35 वर्ष की आयु तक गणित और द्वंद्वात्मक तर्क, फिर 15 वर्ष तक राज्य के व्यावहारिक पदों पर सेवा करता है, और 50 वर्ष की आयु में शुभ को देखने और शासन करने के योग्य होता है।
5. **स्वार्थ-रहित शासन।** संरक्षकों के पास निजी संपत्ति और परिवार नहीं होते, इसलिए भ्रष्टाचार का कोई कारण नहीं रहता और वे सबके हित में शासन करते हैं।

गुण

- यह राजनीति को केवल सत्ता का नहीं, ज्ञान और नैतिक उद्देश्य का विषय बनाता है।
- यह शिक्षा और पद के लिए योग्यता पर बल देता है, जो आधुनिक योग्यता-आधारित सेवाओं के विचार की जड़ है।
- यह राज्य को न्याय से जोड़ता है, जिसमें हर वर्ग अपना-अपना कार्य करता है।

आलोचना

- **कार्ल पॉपर** ने इस विचार को अधिनायकवादी कहा, क्योंकि यह एक अभिजात वर्ग को असीमित सत्ता देता है और आलोचना के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ता।

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

- अरस्तू ने आपत्ति की कि विचार वस्तुओं से अलग अस्तित्व रखते हैं और परिवर्तन की व्याख्या नहीं करते।
- शुभ के ज्ञान की परीक्षा नहीं हो सकती, इसलिए विशेषज्ञता के दावों का दुरुपयोग हो सकता है।
- सामान्य नागरिकों को शासन में कोई भागीदारी नहीं मिलती।

आज की प्रासंगिकता

यह विचार सरकार में विशेषज्ञता की आधुनिक बहसों में जीवित है। खुली परीक्षा से सिविल सेवकों का चयन, प्रशिक्षित न्यायाधीशों की माँग और नैतिक नेतृत्व का आग्रह, ये सब प्लेटो के उस विश्वास को दोहराते हैं कि सार्वजनिक पद धनवानों या केवल लोकप्रिय लोगों को नहीं, बल्कि उन्हें मिलना चाहिए जो परखे गए, शिक्षित और जनहित के प्रति समर्पित हों।

निष्कर्ष

विचार सिद्धांत प्लेटो की राजनीति की तात्त्विक जड़ है। इसी से स्पष्ट होता है कि वे लोकतंत्र पर अविश्वास क्यों करते हैं और बुद्धि व चरित्र वाले शासकों की माँग क्यों करते हैं। दार्शनिक राजा का आदर्श साकार करना कठिन है, फिर भी यह हर युग को स्मरण कराता है कि शासन करने वालों में ज्ञान के साथ सामान्य हित के प्रति निष्ठा भी होनी चाहिए।

प्रश्न 3 (अथवा) • इकाई 1 10 अंक · ≈ 600–700 शब्द

सुकरात पर मुकदमा क्यों चला और उन्हें मृत्युदंड क्यों दिया गया? उन पर लगे आरोपों, उनकी प्रतिरक्षा और राजनीतिक दर्शन के लिए उनकी मृत्यु के महत्त्व की विवेचना कीजिए।

प्रस्तावना

सुकरात (469-399 ई.पू.) एथेंस के पहले महान नैतिक दार्शनिक थे। उन्होंने कुछ नहीं लिखा; हम उन्हें मुख्यतः प्लेटो के संवादों और ज़ेनोफ़न की रचनाओं से जानते हैं। 399 ई.पू. में एथेंस की जूरी ने उन्हें मृत्युदंड दिया और यह मुकदमा व्यक्ति की अंतरात्मा और राज्य के संघर्ष का स्थायी प्रतीक बन गया।

मुकदमे की पृष्ठभूमि

- एथेंस पेलोपोनेशियाई युद्ध (404 ई.पू.) हार चुका था और तीस तानाशाहों का अल्पकालीन शासन झेल चुका था। इन तीस में से क्रिटियस कभी सुकरात का साथी रहा था, जिससे दार्शनिक पर संदेह किया गया।
- सुकरात कुछ लोकतांत्रिक प्रथाओं की आलोचना करते थे, जैसे अधिकारियों का लॉटरी से चयन, और वे राजनेताओं, कवियों तथा कारीगरों से सबके सामने प्रश्न करते थे। इससे शक्तिशाली नागरिक अपमानित महसूस करते थे; वे स्वयं को राज्य का *गैडफ्लाई* (डंक मारने वाली मक्खी) कहते थे।
- असुरक्षा के समय बहुत से एथेंसवासी परंपरागत मूल्यों पर उनके प्रश्नों को खतरनाक मानते थे।

आरोप

अभियोग मेलेतस ने लगाया, जिसका समर्थन अनितस और लाइकन ने किया। इसमें कहा गया कि सुकरात:

1. नगर के देवताओं को नहीं मानते और नए देवताओं का प्रचार करते हैं (अधर्म); तथा
2. युवाओं को भ्रष्ट करते हैं।

मामले की सुनवाई सामान्य नागरिकों की एक बड़ी जूरी ने की। थोड़े बहुमत से उन्हें दोषी ठहराया गया।

उनकी प्रतिरक्षा (प्लेटो की 'एपोलॉजी')

- उन्होंने दिखाया कि मेलेतस का आरोप असंगत और आधारहीन है।

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

- उन्होंने बताया कि डेल्फी की देववाणी ने उन्हें सबसे बुद्धिमान कहा था। उन्होंने इसका अर्थ यह लिया कि केवल वे अपने अज्ञान को जानते हैं, और उन्होंने स्वयं तथा दूसरों की परीक्षा करना अपना दैवी कर्तव्य माना।
- जूरी ने इस शर्त पर बरी करने का प्रस्ताव दिया कि वे दर्शन छोड़ दें, तब भी उन्होंने मना कर दिया और कहा कि बिना परखा हुआ जीवन जीने योग्य नहीं है।
- अपना दंड स्वयं सुझाने को कहा गया, तो उन्होंने पहले नगर की सेवा के बदले सार्वजनिक खर्च पर भोजन का सुझाव दिया, फिर मामूली जुर्माने का। इसके बाद जूरी ने मृत्युदंड के पक्ष में मत दिया।

मृत्यु और आज्ञापालन का प्रश्न

'क्रिटो' में मित्रों ने भाग निकलने का प्रबंध किया, पर सुकरात ने मना कर दिया। उनका तर्क था कि वे जीवन भर एथेंस के कानूनों के अधीन रहे, जिन्होंने उनका पालन-पोषण किया, और यहाँ रहना चुनकर उन्होंने उन्हें स्वीकार किया। कानून तोड़ना राज्य को हानि पहुँचाना होता और यह दिखाता कि वे जो सिखाते थे उसे कभी मानते ही नहीं थे। उन्होंने हेमलॉक का विष पिया और 'फेडो' में प्लेटो ने उनकी शांत मृत्यु का वर्णन किया है।

राजनीतिक दर्शन के लिए महत्त्व

विषय	मुकदमे का अर्थ
विचार की स्वतंत्रता	बहुमत की राय के सामने मुक्त जिज्ञासा की प्रारंभिक कसौटी
लोकतंत्र की आलोचना	प्लेटो ने इससे अज्ञानी बहुमत के शासन पर अपना संदेह बनाया
कानून का पालन	दंड स्वीकार करना राजनीतिक दायित्व का एक क्लासिक तर्क है
अंतरात्मा और राज्य	उन्होंने कानून माने पर अपना मिशन नहीं छोड़ा, यह सैद्धांतिक असहमति का आदर्श है
दर्शन की भूमिका	दर्शन निजी अवकाश नहीं, सार्वजनिक कर्तव्य है

मूल्यांकन

कुछ विद्वान मानते हैं कि निर्णय पराजित नगर के भय को दर्शाता है; अन्य कहते हैं कि लोकतांत्रिक जूरी को उनका न्याय करने का अधिकार था। दोनों स्थितियों में एथेंस की प्रायः इस बात के लिए आलोचना होती है कि उसने विचारों को दंडित किया, और यह मुकदमा आज भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा सविनय अवज्ञा की बहसों में उद्धृत होता है।

आधुनिक लोकतंत्र के लिए सीख

जब अदालतें या सरकारें अभिव्यक्ति पर रोक लगाती हैं, तब यह मुकदमा प्रायः याद किया जाता है। लोकतांत्रिक संविधान अब अभिव्यक्ति और शांतिपूर्ण असहमति की रक्षा करते हैं, कुछ इसलिए कि समाजों ने ऐसे मामलों से सीखा है कि बहुमत भी गलत हो सकता है। साथ ही, कानून स्वीकार करने का सुकरात का निर्णय नागरिकों को याद दिलाता है कि असहमति ईमानदार और खुले तरीकों से, वैध प्रक्रिया का सम्मान करते हुए, होनी चाहिए।

निष्कर्ष

सुकरात की मृत्यु ने प्लेटो के राजनीतिक चिंतन को और उनके माध्यम से संपूर्ण पाश्चात्य दर्शन को आकार दिया। यह बहुमत की असहिष्णुता के विरुद्ध चेतावनी है और इस बात की सीख भी कि नागरिकों का कर्तव्य है अपने समाज की परीक्षा करना।

प्रश्न 4 · इकाई 2 10 अंक · ≈ 600–700 शब्द

मैकियावेली की वर्चू (virtu) और फॉर्च्यून (fortuna) की अवधारणाओं की व्याख्या कीजिए। एक शासक

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

भाग्य को कितना नियंत्रित कर सकता है?

प्रस्तावना

फ्लोरेंस के राजनयिक और लेखक निकोलो मैकियावेली (1469-1527) ने इटली में युद्ध और राजनीतिक परिवर्तन के युग में शासकों के लिए 'द प्रिंस' लिखी (रचना 1513, प्रकाशन 1532)। पुस्तक में दो विचार बार-बार आते हैं: *वर्चू* यानी शासक की अपनी योग्यता, और *फॉर्च्यून*, यानी संयोग की शक्ति। इनका संबंध बताता है कि शासक कैसे सत्ता पाता और बनाए रखता है।

वर्चू का अर्थ

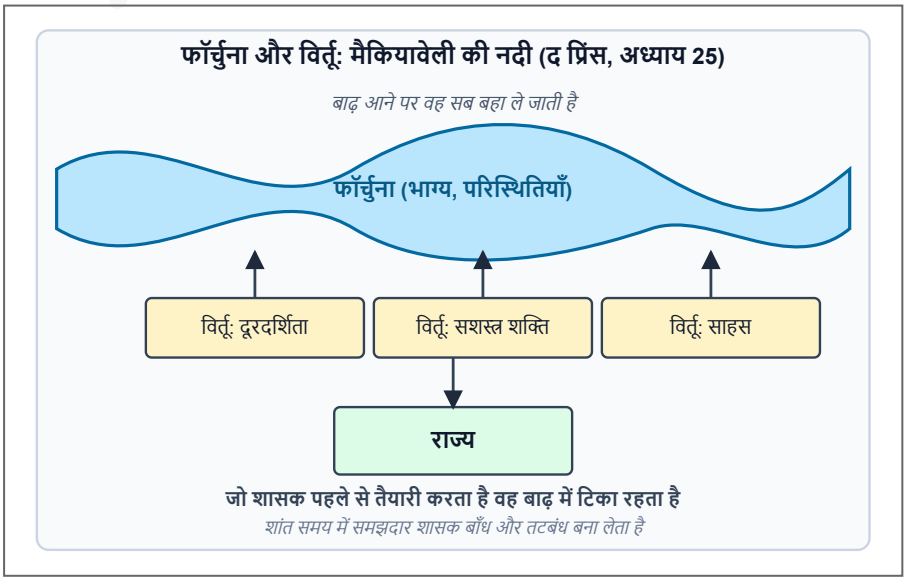
- वर्चू का अर्थ नैतिक अच्छाई नहीं है। इसका अर्थ है परिस्थितियों का सामना करने की **ऊर्जा, कौशल, साहस और राजनीतिक क्षमता**।
- इसमें सैन्य शक्ति, चतुर निर्णय, सही समय पर कार्य करने की तत्परता, और राज्य की सुरक्षा के लिए आवश्यक होने पर क्रूरता या छल का प्रयोग करने की इच्छा शामिल है।
- मैकियावेली सेज़ारे बोर्जिया और सिराक्यूज़ के हीरो की वर्चू की प्रशंसा करते हैं। उनका मत है कि शासक को **सिंह और लोमड़ी** जैसा होना चाहिए: भेड़ियों को डराने जितना बलवान, और जाल पहचानने जितना चालाक।
- वर्चू पहले से तैयारी करने की आदत भी है, ताकि परिवर्तन राज्य को नष्ट न कर सकें।

फॉर्च्यून का अर्थ

- फॉर्च्यून रोमन भाग्य की देवी है, जो **संयोग, दुर्घटना और बदलते समय** का प्रतीक है: युद्ध, महामारी, शासक की मृत्यु या किसी प्रतिद्वंद्वी का उदय।
- मैकियावेली कभी-कभी उसे ऐसी स्त्री के रूप में चित्रित करते हैं जो साहसी और युवाओं का साथ देती है, जो "कम सतर्क, अधिक उग्र होते हैं और अधिक साहस से उस पर शासन करते हैं।"
- वह शक्तिशाली है, पर सब कुछ उसके अधीन नहीं है।

नदी का रूपक (अध्याय 25)

मैकियावेली भाग्य की तुलना एक **उफनती नदी** से करते हैं, जो बाढ़ में पेड़ और इमारतें गिरा देती है और मिट्टी एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है। लोग उसका सामना नहीं कर सकते, फिर भी शांत मौसम में वे बाँध और नहरें बना सकते हैं, ताकि नदी फिर चढ़े तो नियंत्रित किनारों में बहे या उसका वेग कम हानिकारक हो।



फॉर्च्यून नदी के रूप में और वर्चू शांत समय में बनाए गए बाँधों के रूप में

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

शासक भाग्य को कितना नियंत्रित कर सकता है?

1. **आधा-आधा।** वे कहते हैं कि भाग्य हमारे कार्यों के आधे का निर्णायक हो सकता है, पर बाकी आधा, या लगभग आधा, वह हम पर छोड़ देता है।
2. **तैयारी।** बुद्धिमान शासक अच्छे समय में बाँध बनाता है: भाड़े के सैनिकों की जगह नागरिक सेना, ठोस कानून और जनता से अच्छे संबंध।
3. **अनुकूलन।** भाग्य बदलता है, और सफलता उसे मिलती है जिसका कार्य करने का ढंग समय के अनुकूल हो। पोप जूलियस द्वितीय आवेगपूर्ण कार्रवाई से सफल हुआ क्योंकि परिस्थितियाँ उसके स्वभाव से मेल खाती थीं; वही साहस बाद में उसे नष्ट भी कर सकता था।
4. **साहस।** क्योंकि भाग्य स्त्री जैसा है, सतर्क रहने से आवेगपूर्ण होना बेहतर है; वह उन्हीं के सामने झुकती है जो उस पर प्रहार करते हैं।
5. **सीमाएँ।** सबसे कुशल शासक भी अपना स्वभाव हमेशा नहीं बदल सकता, इसलिए कुछ असफलता अनिवार्य है। सेज़ारे बोर्जिया ने अपनी सत्ता सावधानी से बनाई, पर उसके पिता पोप अलेक्ज़ेंडर षष्ठम की मृत्यु के समय वह स्वयं गंभीर रूप से बीमार था, और इसी दुर्घटना से बर्बाद हो गया।

मूल्यांकन

- मैकियावेली राजनीति को केवल दैवी विधान का नहीं, मानवीय प्रयास का क्षेत्र बनाकर मध्ययुगीन विचारों से अलग होते हैं।
- उनका दृष्टिकोण न भाग्यवादी है, न पूरी तरह आत्मविश्वासी; वह यथार्थवादी है।
- आलोचक कहते हैं कि उनकी वर्चू नैतिकता से रहित है और "बाँध" हर संकट से नहीं बचा सकते। समर्थक कहते हैं कि वे तत्परता सिखाते हैं, जो हर राजनेता को चाहिए।

यह पुस्तक आज भी क्यों महत्त्वपूर्ण है

मैकियावेली की सीख है कि राजनीति में केवल अच्छी नीयत पर्याप्त नहीं; नेताओं को दूरदर्शिता, संस्थाएँ और समय पर कार्य चाहिए। बाढ़ और महामारी से लेकर आर्थिक झटकों तक, संकट प्रबंधन पर आधुनिक लेखक विपत्ति से पहले सुरक्षा बनाने की उनकी सलाह दोहराते हैं। इसीलिए 'द प्रिंस' को केवल शासकों की पुस्तक नहीं, राजनीतिक यथार्थवाद की मार्गदर्शिका के रूप में पढ़ा जाता है।

निष्कर्ष

मैकियावेली के लिए शासक की सफलता वर्चू और फॉर्च्यून के मिलन का परिणाम है। भाग्य अवसर देता है, और वर्चू तय करती है कि उसका उपयोग होगा या नहीं। जो शासक शांत समय में तैयारी करता है, समय के अनुसार ढलता है और साहस से कार्य करता है, वह जो कुछ होता है उसका लगभग आधा नियंत्रित कर सकता है, और राज्य की स्थापना और रक्षा के लिए यह पर्याप्त है।

प्रश्न 4 (अथवा) · इकाई 2 10 अंक · ≈ 600–700 शब्द

राज्य, कानून तथा चर्च और राज्य के संबंध पर सेंट ऑगस्टाइन और सेंट थॉमस एक्विनास के राजनीतिक विचारों की तुलना कीजिए।

प्रस्तावना

सेंट ऑगस्टाइन (354-430) और सेंट थॉमस एक्विनास (1225-1274) ईसाई राजनीतिक चिंतन के दो प्रमुख विचारक हैं। ऑगस्टाइन रोमन साम्राज्य के अंत में हुए, एक्विनास उच्च मध्य युग में, जब यूरोप में अरस्तू की रचनाएँ पुनः प्राप्त हो चुकी थीं। राज्य पर उनके विचार इसलिए भिन्न हैं कि उनके समय और स्रोत भिन्न हैं।

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

ऑगस्टाइन: राज्य और दो नगर

- **संदर्भ।** 410 ई. में गॉथों द्वारा रोम लूटे जाने के बाद पैगनों ने ईसाई धर्म को दोष दिया। ऑगस्टाइन ने 'सिटी ऑफ गॉड' में इसका उत्तर दिया।
- **दो नगर।** *ईश्वर का नगर* उनसे बनता है जो ईश्वर से प्रेम करते हैं; *सांसारिक नगर* उनसे जो स्वयं से प्रेम करते हैं। इतिहास में वे मिले हुए हैं और अंतिम न्याय के दिन ही अलग होंगे।
- **राज्य की उत्पत्ति।** राज्य मनुष्य के पतन का परिणाम है। पाप ने दमन, दासता और संपत्ति को आवश्यक बनाया; वह पाप का उपचार है, प्राकृतिक संस्था नहीं।
- **न्याय।** "न्याय के बिना राज्य बड़े डाकू-दलों के सिवा क्या हैं?" न्यायहीन राज्य वास्तविक राष्ट्रमंडल नहीं है।
- **कानून।** शाश्वत कानून ईश्वर का मस्तिष्क है; सांसारिक कानून उतना ही वैध है जितना वह उससे मेल खाता है।
- **चर्च।** चर्च आत्मा को स्वर्गीय नगर की ओर ले जाता है, और ईसाइयों को लौकिक मामलों में राज्य का पालन करना चाहिए क्योंकि वह शांति बनाए रखता है।

एक्विनास: राज्य स्वाभाविक है

- **संदर्भ।** डोमिनिकन भिक्षु एक्विनास ने अपनी 'सुम्मा थियोलॉजिका' और 'ऑन किंगशिप' में अरस्तू का उपयोग किया।
- **राज्य की उत्पत्ति।** मनुष्य स्वभाव से सामाजिक और राजनीतिक प्राणी है, इसलिए पाप न होता तब भी राज्य होता। वह स्वाभाविक और अच्छा है, यद्यपि कृपा उसे पूर्ण करती है।
- **उद्देश्य।** सामान्य हित सुरक्षित करना, अर्थात् शांति, सद्गुण और अच्छे जीवन की परिस्थितियाँ।
- **चतुर्विध कानून।**

1. *शाश्वत कानून*: ब्रह्मांड के लिए ईश्वर की योजना।

2. *प्राकृतिक कानून*: शाश्वत कानून का वह भाग जो मानव बुद्धि को ज्ञात है।

3. *मानवीय कानून*: शासकों द्वारा सामान्य हित के लिए बनाए नियम, जो प्राकृतिक कानून से निकले हों।

4. *दैवी कानून*: धर्मग्रंथ में प्रकट ईश्वरीय आदेश। **अन्यायपूर्ण कानून।** जो मानवीय कानून प्राकृतिक कानून के विरुद्ध हो, वह कानून नहीं, कानून का भ्रष्ट रूप है। विवाद या अव्यवस्था से बचने के सिवा उसका पालन आवश्यक नहीं। **शासन।** वे राजतंत्र को सर्वोत्तम रूप मानते हैं, पर व्यावहारिक सुरक्षा के लिए मिश्रित संविधान को, और सार्वजनिक सत्ता द्वारा अत्याचारी का प्रतिरोध स्वीकार करते हैं। **चर्च और राज्य।** दोनों अपने-अपने क्षेत्र में सर्वोच्च हैं; राज्य लौकिक कल्याण देखता है, चर्च पारलौकिक मुक्ति, और आध्यात्मिक मामलों में लौकिक शासक को पोप के प्रति आदर रखना चाहिए।

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

तुलना

बिंदु	ऑगस्टाइन	एक्विनास
विचारों का स्रोत	प्लेटो, धर्मग्रंथ, नव-प्लेटोवाद	अरस्तू, धर्मग्रंथ
राज्य की उत्पत्ति	पाप का परिणाम; उपचारात्मक	मनुष्य के लिए स्वाभाविक; स्वयं में अच्छा
राजनीति का दृष्टिकोण	निराशावादी	आशावादी
कानून	शाश्वत कानून सांसारिक कानून को परखता है	चतुर्विध योजना, जिसमें प्राकृतिक कानून बुद्धि और ईश्वर को जोड़ता है
न्याय	पूर्ण रूप से केवल ईश्वर के नगर में	कानून द्वारा सांसारिक राज्य में संभव
चर्च और राज्य	चर्च मार्गदर्शन करता है; राज्य शांति रखता है	पृथक क्षेत्र; आध्यात्मिक मामलों में चर्च उच्च
प्रतिरोध का अधिकार	बुरे शासकों का भी पालन	अन्यायपूर्ण कानून बाध्यकारी नहीं; अत्याचार का प्रतिरोध हो सकता है

मूल्यांकन

ऑगस्टाइन के निराशावाद ने बाद के ईसाई धर्मशास्त्र को, लूथर सहित, आकार दिया। एक्विनास ने आस्था और बुद्धि का समन्वय किया और मध्ययुगीन राजनीति को तर्कसंगत और प्राकृतिक आधार दिया; उनके प्राकृतिक कानून ने ग्रोशियस और लॉक जैसे परवर्ती विचारकों को प्रभावित किया। आलोचक कहते हैं कि ऑगस्टाइन सांसारिक जीवन को कम आँकते हैं और एक्विनास चर्च को अत्यधिक ऊँचा स्थान देते हैं।

परवर्ती चिंतन में महत्त्व

यह तुलना विद्यार्थियों को राजनीतिक विचारों का परिवर्तन समझने में भी मदद करती है। ऑगस्टाइन पूछते हैं कि पतित संसार में ईसाई को कैसे जीना चाहिए, एक्विनास समझाते हैं कि बुद्धि और कानून सामान्य हित की सेवा कैसे कर सकते हैं, और आगे के आधुनिक विचारक सत्ता का स्रोत ईश्वर से जनता की ओर ले जाते हैं। इन विचारकों को क्रम से पढ़ने पर दिखता है कि प्राकृतिक कानून की धारणा ने प्राकृतिक अधिकारों के आधुनिक विचार की तैयारी कैसे की।

निष्कर्ष

ऑगस्टाइन राज्य को पाप का उपचार मानते हैं और एक्विनास सामान्य हित के लिए बना स्वाभाविक समुदाय। साथ मिलकर वे पाश्चात्य चिंतन की उस यात्रा को दिखाते हैं जो सांसारिक व्यवस्था के प्रति अविश्वास से कानून और राजनीतिक सत्ता के तर्कसंगत सिद्धांत की ओर गई।

प्रश्न 5 • इकाई 3 10 अंक · ≈ 600–700 शब्द

जे. एस. मिल की 'द सब्जेक्शन ऑफ विमेन' में स्त्रियों की समानता के पक्ष में दिए गए तर्कों की विवेचना कीजिए।

प्रस्तावना

जॉन स्टुअर्ट मिल (1806-1873) उपयोगितावाद और उदारवाद के प्रमुख विचारक थे। 'द सब्जेक्शन ऑफ विमेन' (1869) में, जो उन्होंने अपनी पत्नी हैरियट टेलर और उनकी पुत्री हेलेन की सहायता से लिखी, उन्होंने तर्क दिया कि एक लिंग की दूसरे के अधीन कानूनी दासता स्वयं में अनुचित है और मानव प्रगति की एक प्रमुख

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

बाधा है। 1867 में सांसद के रूप में वे रिफॉर्म बिल में संशोधन ला चुके थे कि स्त्रियों को पुरुषों के समान शर्तों पर मताधिकार मिले; वह गिर गया था।

केंद्रीय दावा

मिल कहते हैं कि "एक लिंग की दूसरे के अधीन कानूनी दासता स्वयं में अनुचित है, और अब मानव सुधार की प्रमुख बाधाओं में से एक है; और उसकी जगह पूर्ण समानता के सिद्धांत को लेना चाहिए।"

मुख्य तर्क

1. **रीति स्वभाव नहीं है।** कहा जाता है कि स्त्रियाँ "स्वभाव से" केवल घर के योग्य हैं। मिल उत्तर देते हैं कि जिसे हम स्त्री-स्वभाव कहते हैं वह शिक्षा और सामाजिक दबाव का परिणाम है। लंबी जबरन अधीनता के बिना स्त्रियाँ क्या कर सकती थीं, यह कोई नहीं जान सकता, जैसे केवल गर्मघर में उगाए पौधे के स्वभाव का निर्णय कोई नहीं कर सकता।
2. **प्राकृतिक व्यवस्था नहीं, बल का शासन।** स्त्रियों की अधीनता पुरुषों की उस शारीरिक शक्ति पर टिकी है जो कानून बन गई। उनके समय के विवाह कानून पति को पत्नी के शरीर, संपत्ति और कमाई पर नियंत्रण देते थे।
3. **स्वतंत्रता।** 'ऑन लिबर्टी' के सिद्धांत के अनुसार, जब तक दूसरों को हानि न हो, हर व्यक्ति को विकास और जीवन-शैली चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। स्त्रियों के लिए पेशे बंद करना इस स्वतंत्रता को नकारना है।
4. **उपयोगिता।** प्रतिभा का श्रेष्ठ उपयोग सामान्य सुख बढ़ाता है। आधी आबादी को बाहर रखना योग्यता को व्यर्थ करता है और समाज को उपलब्ध बुद्धि का भंडार आधा कर देता है।
5. **पुरुषों का नैतिक सुधार।** घरेलू असमानता पुरुषों को स्वार्थ और आदेश देने की आदत सिखाती है; समानों का विवाह दोनों साथियों को बेहतर बनाता है और बच्चों को न्याय के लिए तैयार करता है।
6. **स्त्रियों का अपना हित।** स्त्रियों को अपने हितों की रक्षा के लिए मताधिकार और कानूनी अधिकार चाहिए, क्योंकि कोई समूह अपने प्रतिनिधित्व के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रह सकता।
7. **योग्यता का प्रमाण।** जिन स्त्रियों को अवसर मिला, जैसे रानियाँ, उन्होंने प्रायः अच्छा शासन किया।

माँगे गए सुधार

- विवाह और संपत्ति में समान अधिकार: पत्नी पति की सेविका न हो।
- शिक्षा और सभी व्यवसायों व पदों तक समान पहुँच।
- पुरुषों के समान शर्तों पर स्त्रियों को मताधिकार।

मूल्यांकन

- **गुण।** यह पितृसत्ता पर एक अग्रणी उदारवादी प्रहार था और बाद के मताधिकार आंदोलनों को प्रभावित किया; यह दिखाता है कि उदारवाद यदि संगत हो तो उसमें स्त्रियाँ शामिल होनी चाहिए।
- **सीमाएँ।** मिल का मानना था कि अधिकांश विवाहित स्त्रियाँ फिर भी घरेलू कार्य चुनेंगी, और कुछ नारीवादी कहती हैं कि उन्होंने घर में श्रम-विभाजन पर पर्याप्त प्रश्न नहीं उठाए। स्त्री-स्वभाव पर उनका मत सीमित प्रमाणों पर भी आधारित है।
- फिर भी उनकी कई माँगें, जैसे विवाहित स्त्रियों के संपत्ति अधिकार और मताधिकार, बाद में ब्रिटेन में पूरी हुईं (1870 और 1882 के विवाहित स्त्री संपत्ति अधिनियम, तथा 1918 से कुछ स्त्रियों को और 1928 से सभी वयस्क स्त्रियों को मताधिकार)।

उदारवादी चिंतन में मिल का स्थान

मिल का तर्क था कि उदार समाज की परीक्षा इससे होती है कि वह अपने सबसे कम शक्तिशाली सदस्यों से कैसा व्यवहार करता है। उनका निबंध उनकी अन्य कृतियों, 'ऑन लिबर्टी' (1859), 'यूटिलिटेरियनिज़्म' (1861) और 'कंसिडरेशन्स ऑन रिप्रेजेंटेटिव गवर्नमेंट' (1861), के साथ व्यक्ति के विकास की रक्षा करता है, और

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

समझाता है कि मिलिसेंट फॉसेट जैसी परवर्ती अभियानकर्ताओं ने मताधिकार आंदोलन में उनके तर्कों का उपयोग क्यों किया।

निष्कर्ष

मिल का निबंध स्वतंत्रता, उपयोगिता और व्यक्तित्व के उदारवादी सिद्धांतों को परिवार और राजनीति पर लागू करता है। वह तर्क देता है कि जब तक समाज के आधे सदस्य समान अधिकारों से वंचित हैं, तब तक वह स्वतंत्र या प्रगतिशील नहीं हो सकता, और यह उदारवादी नारीवाद की एक क्लासिक कृति बनी हुई है।

प्रश्न 5 (अथवा) · इकाई 3 10 अंक · ≈ 600–700 शब्द

रूसो के संप्रभुता और सामान्य इच्छा के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए। प्रतिनिधित्व के बारे में वे क्या कहते हैं?

प्रस्तावना

जेनेवा के विचारक जीन-जैक्स रूसो (1712-1778) ने 'द सोशल कॉन्ट्रैक्ट' (1762) लिखी, जिसकी शुरुआत इन शब्दों से होती है: "मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है, पर हर जगह वह बेड़ियों में है।" उनका उद्देश्य संगठन का ऐसा रूप खोजना था जिसमें लोग कानूनों का पालन करें और फिर भी पहले जितने स्वतंत्र रहें। इसका उत्तर सामान्य इच्छा की संप्रभुता है।

सामाजिक अनुबंध

- प्रकृति की अवस्था में मनुष्य स्वतंत्र और समान हैं, पर जनसंख्या बढ़ने पर उनमें नैतिकता और सुरक्षा का अभाव है।
- हर व्यक्ति अपने सारे अधिकार किसी एक मनुष्य को नहीं, पूरे समुदाय को सौंपता है। क्योंकि सब समान शर्तों पर ऐसा करते हैं, किसी की हानि नहीं होती और किसी का हित दूसरों के लिए बोझ भारी करने में नहीं है।
- इस प्रकार एक नैतिक और सामूहिक निकाय उत्पन्न होता है, गणराज्य या संप्रभु के रूप में जनता, जिसका एक साझा "मैं" और साझी इच्छा है।

सामान्य इच्छा

1. **अर्थ।** यह समुदाय की वह इच्छा है जो *सामान्य हित* की ओर निर्देशित है, निजी इच्छाओं का योग नहीं। रूसो इसे **सबकी इच्छा** से अलग करते हैं, जो केवल व्यक्तिगत हितों का कुल जोड़ है।
2. **स्रोत।** यह तब बनती है जब नागरिक निजी व्यक्ति के रूप में नहीं, पूरे के सदस्य के रूप में सोचकर कानूनों पर मत देते हैं। हितों के भेद एक-दूसरे को काट देते हैं और सामान्य हित बचता है।
3. **सदा सही।** सामान्य इच्छा सदा जनहित की ओर होती है, यद्यपि जनता का निर्णय कभी भटक सकता है।
4. **स्वतंत्र होने के लिए बाध्य।** जो व्यक्ति सामान्य इच्छा का पालन करने से मना करे, उसे "स्वतंत्र होने के लिए बाध्य" किया जाएगा, क्योंकि जिस कानून को व्यक्ति ने स्वयं अपने लिए निर्धारित किया उसका पालन ही सच्ची स्वतंत्रता है, और नागरिक की निजी इच्छा उसका हीन स्वरूप है।
5. **विधि-निर्माता।** जनता कभी अपना हित नहीं देख पाती, इसलिए स्पार्टा के लाइकर्गस जैसा कोई बुद्धिमान विधि-निर्माता कानून का मसौदा बना सकता है, पर जनता को उन्हें स्वीकृत करना ही होगा।

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

संप्रभुता का स्वरूप

विशेषता	अर्थ
लोकप्रिय	यह पूरी जनता की है, राजा की नहीं
अहस्तांतरणीय	इच्छा की भाँति इसे हस्तांतरित नहीं किया जा सकता
अविभाज्य	इसे अलग-अलग शक्तियों में बाँटा नहीं जा सकता; बाँटना इसे नष्ट करना है
निरपेक्ष	सब सदस्यों पर, सामान्य हित की सीमा के भीतर
लक्ष्य में अचूक	इसका लक्ष्य सामान्य हित है

संप्रभु और सरकार

संप्रभुता सभा में एकत्र जनता में निहित है और कानून बनाती है। *सरकार* केवल एक एजेंट है जो उन्हें लागू करती है और जनता द्वारा किसी भी समय बदली जा सकती है। इसलिए वे संप्रभु और सरकार में भेद करते हैं।

प्रतिनिधित्व पर रूसो

- वे कहते हैं कि इंग्लैंड की जनता स्वयं को स्वतंत्र समझती है, पर वह केवल संसद सदस्यों के चुनाव के दौरान स्वतंत्र है; चुने जाते ही जनता गुलाम है, कुछ भी नहीं है।
- क्योंकि संप्रभुता सामान्य इच्छा का प्रयोग है और इच्छा का प्रतिनिधित्व नहीं हो सकता, इसलिए सांसद केवल आयुक्त हैं, प्रतिनिधि नहीं। जो कानून जनता द्वारा स्वयं अनुमोदित नहीं हैं, वे शून्य हैं।
- यह मत यूनानी नगर-राज्यों या जेनेवा जैसे छोटे राज्यों के अनुकूल है, जहाँ सब नागरिक एकत्र हो सकते हैं। बड़े राज्यों के लिए वे संघों का सुझाव देते हैं।
- वे कहते हैं कि पूर्ण अर्थ में लोकतंत्र केवल देवताओं की जनता के लिए उपयुक्त है; व्यावहारिक रूप से सर्वोत्तम सरकार निर्वाचित अभिजाततंत्र है।

मूल्यांकन

- **गुण।** यह वैध सत्ता को जनसहमति और समानता पर आधारित करता है, और फ्रांसीसी क्रांति तथा बाद के लोकतंत्र को प्रेरित किया।
- **आलोचना।** कॉन्स्टेंट और बर्लिन जैसे उदारवादियों को भय है कि "स्वतंत्र होने के लिए बाध्य" बहुमत के अत्याचार को उचित ठहरा सकता है; सामान्य इच्छा कौन तय करेगा, यह स्पष्ट नहीं; और प्रतिनिधित्व का उनका अस्वीकार आधुनिक बड़े राज्यों के लिए अव्यावहारिक है।

रूसो और उनके उत्तराधिकारी

जनता को कानून का स्रोत मानने के रूसो के विचारों ने 1789 की मानव अधिकारों की घोषणा और जैकोबिनों को प्रभावित किया। बाद के लोकतंत्रों ने उनकी चेतावनी के बावजूद अधिकतर प्रतिनिधि सरकार अपनाई, और नागरिकों को कानून-निर्माण के निकट लाने के लिए चुनाव, जनमत-संग्रह और स्थानीय सभाओं का उपयोग किया। इस अर्थ में उनकी आपत्ति एक कसौटी का काम करती है जिस पर प्रतिनिधि प्रणालियाँ परखी जा सकती हैं।

निष्कर्ष

रूसो का सिद्धांत जनता को वैध सत्ता का एकमात्र स्रोत बनाता है और स्वतंत्रता को स्वयं बनाए कानूनों के पालन में रखता है। यद्यपि सामान्य इच्छा को लागू करना कठिन है, लोकप्रिय संप्रभुता का उनका विचार आधुनिक लोकतांत्रिक चिंतन के केंद्र में बना हुआ है।

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

प्रश्न 6 • इकाई 4 10 अंक · ≈ 600–700 शब्द

मार्क्स के अलगाव (एलिएनेशन) के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए। पूँजीवाद श्रमिक को कैसे अलग-थलग करता है?

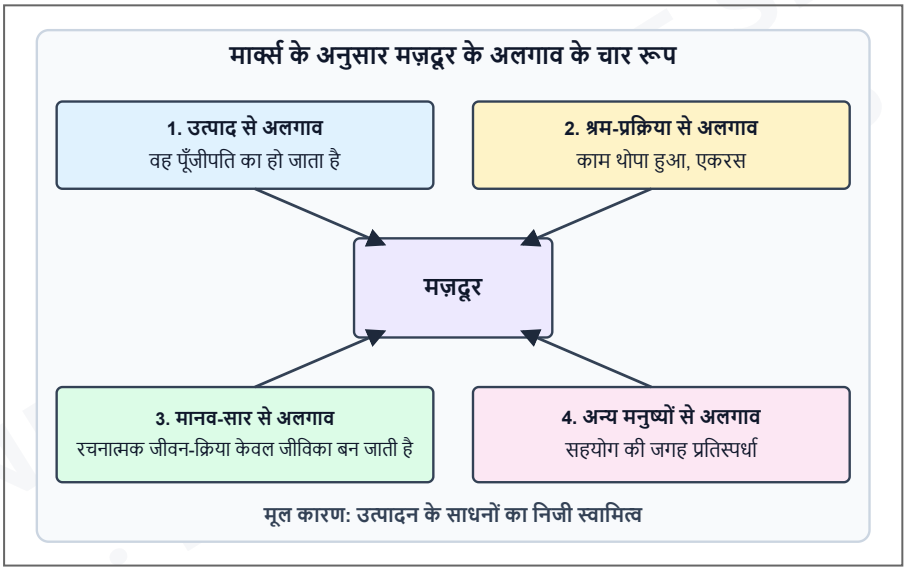
प्रस्तावना

कार्ल मार्क्स (1818-1883) ने अलगाव (*एंटफ्रेमडुंग*) का सिद्धांत अपनी 'आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियाँ 1844' में विकसित किया, जो पेरिस में लिखी गईं और केवल 1932 में प्रकाशित हुईं। यह "युवा मार्क्स" का केंद्रीय विचार है और बताता है कि पूँजीवाद में श्रमिक अपने कार्य, उत्पाद, दूसरों और अपनी मानवीय प्रकृति से कैसे अजनबी हो जाता है।

सिद्धांत का आधार

मार्क्स मानते हैं कि मनुष्य का सार **स्वतंत्र, सचेत, रचनात्मक श्रम** है। कार्य के माध्यम से लोग प्रकृति को ढालते हैं और स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं। निजी संपत्ति और मजदूरी-श्रम पर आधारित समाज में कार्य पूर्ति न रहकर जीवित रहने का जबरन साधन बन जाता है। यही हानि अलगाव है।

अलगाव के चार रूप



पूँजीवाद में श्रमिक के अलगाव के मार्क्स के चार रूप

1. **श्रम के उत्पाद से।** श्रमिक वस्तुएँ बनाता है पर वे पूँजीपति की होती हैं। जितना अधिक वह उत्पादन करता है उतना गरीब होता जाता है; उत्पाद एक पराई शक्ति बनकर उसके विरुद्ध खड़ा होता है।
2. **श्रम की प्रक्रिया (उत्पादन के कार्य) से।** कार्य श्रमिक के लिए बाहरी है, उसकी प्रकृति का भाग नहीं। वह स्वयं को केवल कार्य के बाहर, खाते-पीते समय, स्वतंत्र पाता है और कार्य में असहज; श्रम जबरन है, स्वयं का बलिदान है, जिसे कारखाने का अनुशासन, घड़ी और मशीन निर्देशित करते हैं।
3. **प्रजाति-सत्ता (मानव प्रकृति) से।** मनुष्य सचेत, स्वतंत्र गतिविधि का प्राणी है। जब कार्य केवल जीने का साधन हो, तो जीवन-गतिविधि स्वयं साधन बन जाती है, और श्रमिक पशु-जैसी स्थिति में आ जाता है।
4. **अन्य मनुष्यों से।** क्योंकि उत्पाद और श्रम किसी दूसरे के हैं, श्रमिक पूँजीपति के विरुद्ध खड़ा है और रोजगार के लिए अन्य श्रमिकों से भी प्रतिस्पर्धा करता है। मानवीय संबंध धन के संबंधों में बदल जाते हैं।

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

पूँजीवाद इसे क्यों उत्पन्न करता है

पूँजीवाद की विशेषता	परिणाम
उत्पादन के साधनों का निजी स्वामित्व	श्रमिक के पास केवल श्रम-शक्ति है
श्रम-विभाजन और मशीनें	कार्य संकीर्ण, दोहराव वाला और कौशलहीन हो जाता है
मजदूरी-श्रम	श्रम वस्तु की तरह बिकता है
प्रतिस्पर्धा	श्रमिक आपस में होड़ करते हैं; संबंध ठंडे और अवैयक्तिक हो जाते हैं
लाभ का उद्देश्य	श्रमिक का मूल्य उत्पादन के लिए है, व्यक्ति के रूप में नहीं

वस्तु-पूजा (कमोडिटी फेटिशिज़्म)

'कैपिटल' (खंड 1, 1867) में मार्क्स इस विचार को आगे ले जाते हैं: लोगों के आपसी संबंध वस्तुओं के संबंध जैसे प्रतीत होते हैं। वस्तुओं का अपना मूल्य लगता है, जो उन्हें बनाने वाले श्रम को छिपा देता है, और मनुष्य उसी बाज़ार के अधीन हो जाते हैं जिसे उन्होंने स्वयं रचा है।

अलगाव पर विजय

अलगाव को नैतिक अपीलों या ऊँची मजदूरी से दूर नहीं किया जा सकता। वह केवल निजी संपत्ति और मजदूरी-श्रम के उन्मूलन से समाप्त होता है, सर्वहारा क्रांति के द्वारा साम्यवाद में, जहाँ कार्य मानवीय क्षमताओं की स्वतंत्र अभिव्यक्ति बनता है और लोग अनेक दिशाओं में विकसित होते हैं: "सुबह शिकार, दोपहर में मछली पकड़ना, रात के खाने के बाद आलोचना" ('द जर्मन आइडियोलॉजी')।

मूल्यांकन

- **गुण।** यह मार्क्स के अर्थशास्त्र को नैतिक और मनोवैज्ञानिक आयाम देता है और असेंबली लाइन तथा गिग इकोनॉमी जैसे आधुनिक कार्य के अध्ययनों में लागू होता है।
- **आलोचना।** लुई अल्थूसर ने इस अवधारणा को अ-वैज्ञानिक और विचारधारात्मक कहा तथा युवा और परिपक्व मार्क्स के बीच विच्छेद देखा। अन्य कहते हैं कि सिद्धांत एक स्थिर मानव सार मानता है, और नौकरशाही वाले समाजवादी समाजों में भी अलगाव मौजूद रहता है।

आधुनिक जीवन में अलगाव

इस सिद्धांत का उपयोग आज भी कारखाने और दफ्तर के कार्य, कॉल सेंटर और प्लेटफॉर्म श्रम के अध्ययन में होता है, जहाँ श्रमिकों का गति, उत्पाद या उद्देश्य पर प्रायः बहुत कम नियंत्रण होता है। रॉबर्ट ब्लाउनर जैसे समाजशास्त्रियों ने उद्योगों में अलगाव का अध्ययन किया, और कार्य-संतुष्टि, प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी तथा मानवीय कार्य-घंटों की चर्चाएँ उसी चिंता का अनुसरण करती हैं कि कार्य अर्थपूर्ण होना चाहिए।

निष्कर्ष

मार्क्स का सिद्धांत पूँजीवाद को ऐसी व्यवस्था दिखाता है जो धन उत्पन्न करते हुए भी मनुष्य को हानि पहुँचाती है। इसका मुख्य संदेश है कि वास्तविक स्वतंत्रता के लिए अर्थपूर्ण और स्व-निर्देशित कार्य चाहिए, जो विचार आज भी श्रम और गरिमा की बहसों को आकार देता है।

प्रश्न 6 (अथवा) · इकाई 4 10 अंक · ≈ 600–700 शब्द

राज्य, विचारधारा और सामाजिक परिवर्तन के साधनों पर मार्क्स और ग्राम्शी की तुलना कीजिए। ग्राम्शी

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

की आधिपत्य (हेजेमनी) की अवधारणा क्या है?

प्रस्तावना

कार्ल मार्क्स (1818-1883) ने वैज्ञानिक समाजवाद की नींव रखी, जबकि इतालवी कम्युनिस्ट पार्टी के सह-संस्थापक एंटोनियो ग्राम्शी (1891-1937) ने पश्चिमी यूरोप में क्रांति की विफलता के प्रकाश में मार्क्सवाद को संशोधित किया। 1926 में मुसोलिनी के फासीवादी शासन द्वारा गिरफ्तार किए गए ग्राम्शी ने 'प्रिजन नोटबुक्स' (1929-35) लिखीं, जिनमें उन्होंने **आधिपत्य (हेजेमनी)** का विचार विकसित किया।

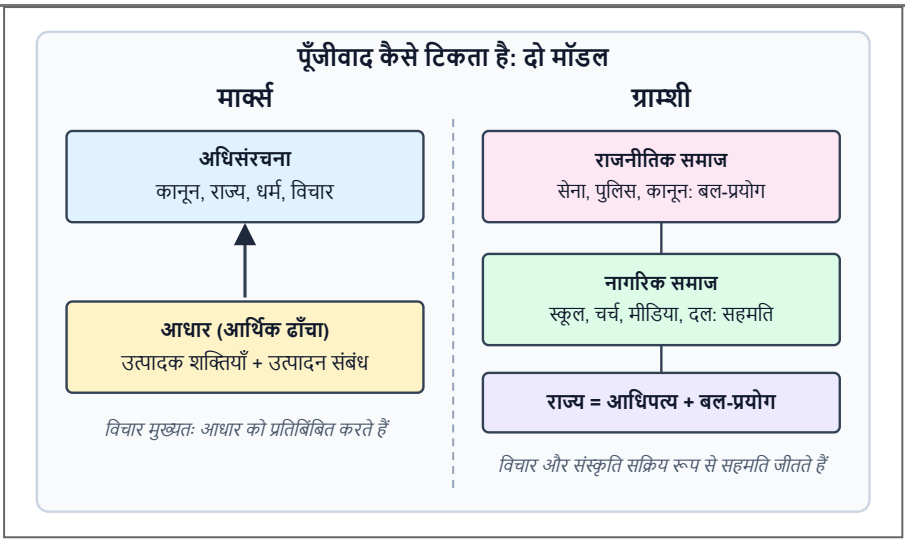
मार्क्स का दृष्टिकोण

- **आधार और अधिरचना।** आर्थिक आधार (उत्पादन संबंध) कानून, राजनीति, धर्म और विचारों की अधिरचना को निर्धारित करता है।
- **राज्य।** 'कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो' में, "आधुनिक राज्य की कार्यपालिका समस्त पूँजीपति वर्ग के सामान्य कार्यों के प्रबंधन की एक समिति मात्र है।" राज्य वर्ग-शासन का साधन है।
- **विचारधारा।** प्रत्येक युग के शासक विचार शासक वर्ग के विचार होते हैं; विचारधारा शोषण को छिपाने वाली मिथ्या चेतना है।
- **परिवर्तन।** पूँजीवाद के अंतर्विरोध सर्वहारा को क्रांति, राज्य-सत्ता पर अधिकार और राज्य के विलुप्त होने से पहले सर्वहारा की अंतरिम तानाशाही की ओर ले जाएँगे।

ग्राम्शी का दृष्टिकोण

- **नागरिक समाज और राजनीतिक समाज।** व्यापक अर्थ में राज्य "राजनीतिक समाज + नागरिक समाज" है: सेना, पुलिस और अदालतों का **दमन**, और विद्यालयों, चर्च, प्रेस, श्रमिक संघों और संस्कृति द्वारा निर्मित **सहमति**।
- **आधिपत्य।** इसका अर्थ है केवल बल से नहीं, **नैतिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक सहमति** से किसी वर्ग का नेतृत्व। पश्चिम में पूँजीवादी शासन इसलिए टिका है कि जनता बुर्जुआ मूल्यों को सामान्य बुद्धि मान लेती है। "दमन के कवच से सुरक्षित आधिपत्य।"
- **जैविक बुद्धिजीवी।** प्रत्येक वर्ग अपने बुद्धिजीवी पैदा करता है जो उसे चेतना और एकता देते हैं; श्रमिक वर्ग को अपने बुद्धिजीवी बनाने और परंपरागत बुद्धिजीवियों को जीतने होंगे।
- **सामान्य बुद्धि और सद्बुद्धि।** साधारण विश्वास विरासत में मिले पूर्वाग्रह और वास्तविक अनुभव का मिश्रण होते हैं; कार्य इन्हें आलोचनात्मक चेतना में बदलना है।
- **स्थिति का युद्ध और गतिशील युद्ध।** रूस में, जहाँ नागरिक समाज "आदिम और लसलसा" था, सीधा आक्रमण (गतिशील युद्ध) राज्य पर कब्जा कर सकता था। पश्चिम में, जहाँ नागरिक समाज "किलों और मोर्चों की शक्तिशाली व्यवस्था" जैसा मजबूत है, सत्ता लेने से पहले प्रति-आधिपत्य बनाने के लिए लंबा सांस्कृतिक संघर्ष (स्थिति का युद्ध) आवश्यक है।

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।



मार्क्स के आधार और अधिरचना की ग्राम्शी के नागरिक और राजनीतिक समाज से तुलना

तुलना

बिंदु	मार्क्स	ग्राम्शी
शक्ति का स्रोत	आर्थिक आधार	आर्थिक शक्ति के साथ सांस्कृतिक नेतृत्व
राज्य	वर्ग-शासन का साधन	दमन और सहमति; नागरिक समाज सहित
विचारधारा	आर्थिक हितों का प्रतिबिंब; मिथ्या चेतना	सक्रिय, सामान्य बुद्धि को ढालती है; संघर्ष का क्षेत्र
बुद्धिजीवियों की भूमिका	गौण	केंद्रीय; जैविक बुद्धिजीवी
परिवर्तन	आर्थिक संकट से क्रांति	संस्कृति द्वारा प्रति-आधिपत्य, फिर राजनीतिक सत्ता
नियतिवाद	प्रबल आर्थिक नियतिवाद	भोंडे नियतिवाद का खंडन; मानवीय इच्छा पर बल ("बुद्धि का निराशावाद, इच्छा का आशावाद")

मूल्यांकन

ग्राम्शी ने यह समझाकर मार्क्सवाद को समृद्ध किया कि पूँजीवाद निरंतर बल के बिना क्यों टिका रहता है, और उन्होंने सांस्कृतिक अध्ययन, यूरोकम्युनिज़्म तथा उत्तर-औपनिवेशिक और निम्नवर्गीय अध्ययनों को प्रभावित किया। आलोचक कहते हैं कि उनकी नोटबुक्स खंडित हैं, आधिपत्य की अवधारणा अस्पष्ट है, और वे वर्ग-संघर्ष के आर्थिक आधार से दूर चले जाते हैं।

ग्राम्शी का परवर्ती प्रभाव

ग्राम्शी के विचार मीडिया, शिक्षा और लोकप्रिय संस्कृति के अध्ययन में व्यापक रूप से प्रयुक्त होते हैं, जहाँ सहमति बिना खुले बल के गढ़ी जाती है। जो राजनीतिक आंदोलन सत्ता चाहने से पहले जनमत बदलने का प्रयास करते हैं, और जो विद्वान पूछते हैं कि स्कूलों या समाचारों में किसके मूल्य सामान्य बुद्धि के रूप में दिखते हैं, वे उनकी आधिपत्य की अवधारणा के साथ काम कर रहे हैं, भले ही वे मार्क्स का पूरा कार्यक्रम न मानें।

निष्कर्ष

मार्क्स ने समझाया कि आर्थिक ढाँचा समाज को कैसे आकार देता है; ग्राम्शी ने दिखाया कि शासन बल के साथ सहमति से भी टिकता है। इस प्रकार आधिपत्य विचारों की लड़ाई को सत्ता-संघर्ष का भाग बनाता है, और राजनीति, मीडिया तथा संस्कृति को समझने में आज भी उपयोगी है।

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

How to use this Demo Set इस डेमो सेट का उपयोग कैसे करें

1. This Demo Set follows the same pattern, marks and layout as the real paper.
2. Cover the answer, write your own attempt first, then compare it with the model answer.
3. Short answers (100-120 words) need a definition, two or three points and an example or thinker's name.
4. For 10-mark answers use the structure: introduction, headed points, evaluation, conclusion.
5. Learn names, dates and main books of each thinker; they earn easy marks.
6. Draw small labelled diagrams where the answer allows; they save words.
7. These are practice questions only and are not taken from the actual sets.

1. यह डेमो सेट असली पेपर के समान पैटर्न, अंक और प्रारूप का है।
2. उत्तर ढककर पहले स्वयं लिखें, फिर आदर्श उत्तर से मिलान करें।
3. लघु उत्तर (100-120 शब्द) में परिभाषा, दो-तीन बिंदु और उदाहरण या विचारक का नाम होना चाहिए।
4. 10 अंक के उत्तर में प्रस्तावना, शीर्षकों सहित बिंदु, मूल्यांकन और निष्कर्ष की संरचना रखें।
5. हर विचारक के नाम, तिथियाँ और मुख्य ग्रंथ याद रखें; इनसे आसान अंक मिलते हैं।
6. जहाँ संभव हो, छोटे नामांकित चित्र बनाएँ; ये शब्द बचाते हैं।
7. ये केवल अभ्यास प्रश्न हैं और वास्तविक सेटों से नहीं लिए गए हैं।

ONLINE STUDENT SEVA · PARIKSHA PASS

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।

Unlock the full sets in the Pariksha Pass App पूरे सेट परीक्षा पास ऐप में अनलॉक करें

You have just worked through one complete Demo Set of **Western Political Thought** (PSSC-03) in the pattern of your university paper: 10 objective questions, 5 short-answer questions and 4 long-answer questions with internal choice, each with a model answer in English and Hindi.

The questions in this Demo Set are **practice questions chosen for demonstration**. They are not taken from the actual Guessing Paper sets.

The full Guessing Paper sets for your university, course and subject – Set A (Most Probable), Set B (Highly Likely) and Set C (Alternate) – are available in the Pariksha Pass App. They follow the same pattern, structure and answer style as this Demo Set.

आपने अभी अपने विश्वविद्यालय के प्रश्न-पत्र के प्रारूप में **पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन** का एक पूरा डेमो सेट हल किया है: 10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न, 5 लघु उत्तरीय प्रश्न और आंतरिक विकल्प सहित 4 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, सभी के आदर्श उत्तर अंग्रेज़ी और हिंदी में।

इस डेमो सेट के प्रश्न प्रदर्शन के लिए चुने गए अभ्यास-प्रश्न हैं। ये असली गेसिंग पेपर सेटों में से नहीं लिए गए हैं।

आपके विश्वविद्यालय, कोर्स और विषय के पूरे गेसिंग पेपर सेट - सेट A (सर्वाधिक संभावित), सेट B (अत्यधिक संभावित) और सेट C (वैकल्पिक) - परीक्षा पास ऐप में उपलब्ध हैं। इनका प्रारूप, संरचना और उत्तर-शैली इसी डेमो सेट जैसी है।

Online Student Seva · Pariksha Pass App · DEMO SAMPLE

Download Pariksha Pass App >

Get all 3 full Guessing Paper sets on Google Play

© Online Student Seva · Exclusive property · Accessible only through the Pariksha Pass App · Copying, sharing or selling is strictly prohibited and will invite serious legal action.
© ऑनलाइन स्टूडेंट सेवा · विशेष संपत्ति · केवल परीक्षा पास ऐप पर उपलब्ध · कॉपी, शेयर या बिक्री पर कड़ी कानूनी कार्रवाई होगी।